₹ 10

www.kewalsachtimes.com

मई 2025

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

RNI NO.-BIHBIL/2011/49252, DAVP NO.-131729, POSTAL REG. NO.:-PS.-78

सेना के साथ खड़ा

भारत

सत्ता के लिए लड़ता

पाकिस्तान

जन-जन की आवाज है केवल सच

निर्भीकता हमारी पहचान
केवल सच
हिन्दी मासिक पत्रिका

Kewalachlive.in
वेब पोर्टल न्यूज
24 घंटे आपके साथ

Kewalsach news
www.kewalsach.com
Kewalsach news
Mob.: 9431073769, 9308815605
खबर वहीं,
जो केवल सच हो

आत्म-निर्भर बनने वाले युवाओं को सपोर्ट करें

आपका छोटा सहयोग, हमें मजबूती प्रदान करेगा

BHIM | UPI
G Pay | Paytm

www.kewalsach.com www.kewalsachlive.in

-: सम्पर्क करें :-

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या-28/14,
कंकड़बाग, पटना (बिहार)-800020, मो०:-9431073769, 9308815605

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

एस.एन. कृष्णन
01 मई 1932

अनुष्का शर्मा
01 मई 1988

अशोक गहलोत
03 मई 1951

उमा भारती
03 मई 1959

तृष्णा कृष्णन
04 मई 1983

सनी लियोनी
13 मई 1981

जरीन खान
14 मई 1980

माधुरी दिक्षित
15 मई 1967

राम पेथीनेनी
15 मई 1988

सोनल चौहान
16 मई 1987

स्व.पंकज उदास
17 मई 1951

चार्मी कौर
17 मई 1987

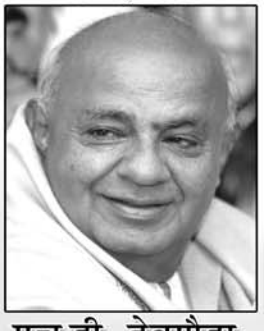

एच.डी. देवगौड़ा
18 मई 1933

एनटीआर जूनियर
20 मई 1983

महबूबा मुफ्ती
22 मई 1959

करण जोहर
25 मई 1972

नितिन गडकरी
27 मई 1957

रवि शास्त्री
27 मई 1962

पंकज कपूर
29 मई 1954

परेश रावल
30 मई 1950

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

Regd. Office :-
East Ashok, Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar) Mob.-09431073769,
E-mail :- kewalsach@gmail.com

Corporate Office:-
Vaishnavi Enclave, Second Floor, Flat No. 2B, Near-firing range, Bariatu Road, Ranchi- 834001
E-mail :- editor.kstimes@rediffmail.com

Delhi Office :-
Sanjay Kumar Sinha
A-68, 1st Floor, Nageshwar talla, Shastri Nagar, New Delhi-110052
Mob.- 09868700991, 09955077308
kewalsach_times@rediffmail.com

Kolkata Office :-
Ajeet Kumar Dube, 131 Chitranjan Avenue, Near- md. Ali Park, Kolkata- 700073 (West Bengal)
Mob.- 09433567880, 09339740757

ADVERTISEMENT RATES PER ISSUE

	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
COLOUR	Cover Page	3,00,000/-	N/A
	Back Page	1,00,000/-	65,000/-
	Back Inside	90,000/-	50,000/-
	Back Inner	80,000/-	50,000/-
	Middle	1,40,000/-	N/A
	Front Inside	90,000/-	50,000/-
	Front Inner	80,000/-	50,000/-

	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
B & W	Inner Page	60,000/-	40,000/-

1. एक साल के नियमित विज्ञापन पर पत्रिका के वेवसाइट **www.kewalsachtimes.com** के फ्रंट पर भी विज्ञापन निःशुल्क तथा आपका वेवसाइट से सीधा लिंक हो सकता है।
2. एक साल के नियमित विज्ञापन पर 10 प्रतिशत की रियायत।
3. आपके प्रोडक्ट या संगठन के प्रचार-प्रसार हेतु आलेख को उचित स्थान।
4. पत्रिका द्वारा सामाजिक कार्य में आपके संगठन/प्रोडक्ट का बैनर/फ्लैक्स को उचित स्थान देकर आपके संगठन का व्यापक प्रचार-प्रसार।
5. विज्ञापन का भुगतान चेक या आर.टी.जी.एस. से ही मान्य होगा।

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

Mobile से सीख रहे हैं SEX

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

Sex Education की बात भारत देश में बहुत जोरो से होने लगी हैं और आधुनिकता की आड़ में प्रत्येक दिन Highteck होता मोबाइल ने तो बड़े - बड़ों को ही नहीं बल्कि 7 वर्ष के बच्चों को भी Sex के प्रति जागरूक कर दिया है और पश्चिमी सभ्यता की अंधी दौर में बच्चों से भी Sex को प्रमोट करती Real बनाकर समाज में अपना वर्चस्व स्थापित कर रहे हैं। आजादी के नाम पर जिस प्रकार का गंदगी का खेल एक दशक में तेजी से बढ़ा है उसपर नकेल नहीं लगा तो भारत से संस्कृति, सभ्यता, संस्कार और प्रकृति के साथ भगवान पर उंगली उठाने वाले लोग अपनी Sex की दलील से युवा पीढ़ी को बर्बाद करने में कामयाब हो जायेंगे। सोसल मीडिया के बढ़ते दवाब ने दूधमुहे बच्चे भी Sex के प्रति जागरूक हो चुके हैं और कलियुग धीरे - धीरे द्वितीय चरण में आगोश में लेते जा रहा है। कई बार सदन में भी sexi video देखने में राजनेता भी पकड़े गये हैं और मोबाइल में जितने App हैं उसका अलग - अलग lock है। घर, स्कूल और कॉलेज सभी जगहों पर मोबाइल की अपनी अपनी उपयोगिता है और अब तो बैंक सहित विभिन्न दस्तावेजों को एक Digilock में रखने की सरकार/कानून मान्यता देती है। 21वीं सदी में खुद को update रखने के लिए मोबाइल का जानकार होना जरूरी हो गया है जिसकी वजह से बच्चे Sex के प्रति जागरूक हो चुके हैं तथा उनका मोबाइल की पडताल करने पर बगावत करने को भी तैयार हैं। सरकार को इस गंभीर समस्या पर गंभीर होना होगा।

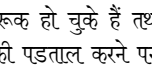

चुपके - चुपके Blue Film देखने वालों का दौर समाप्त हो गया तथा मस्तराम की किताबे भी अपने गुमटी और ठेलों पर नहीं मिलती क्योंकि संचारक्रांति के दौर में सबकुछ मोबाइल में समाहित हो गया है। Digital Market में सभी रिश्ते-नाते और कई प्रोडक्ट मोबाइल में शामिल हो गये हैं और एक टच में सबकुछ मिल जाते हैं बिना किसी के जुगाड़ के। गूगल ने मुझे, आपको और हमारे बच्चों को आखिर ऐसे कैसे किसी को परिवार के बीच में बैठ कर पोर्न देखने को मजबूर किया जा सकता है। अब तो सभी घरों में बच्चों के बीच बैठकर न्यूज देखना भी बहुत बड़ी शर्मिंदगी का काम हो गया है जिसकी वजह से कोई चैनल देखना भी अभिश्राप बनता जा रहा है। विज्ञापन के आड़ में बच्चों के बचपन को भी छीना जा रहा है और उन्हें असमय युवा बनाने की मुहिम चल रहा है। गौर से इस विषय पर सोचिए की सभी न्यूज चौनलों पर हर ब्रेक में एक कन्डोम का प्रचार आता है और इस प्रचार में फिल्मी कलाकार ऐसे प्रचार करते हैं और संगीत बजता है ''मन क्यों बहका रे बहका आधी रात में'' साथ हीं इतने अश्लिल ढ़ंग से कपड़ा उतारते और बेड पर लेटते दिखाया जाता है कि परिवार व बच्चों के बीच बैठे एक सभ्य परिवार के व्यक्ति का सर शर्म से झुक जाता है! भले ही मेडिकल स्टोर पर जाकर कंडोम मांगने में आज भी लोग शमार्ते है लेकिन इस शर्म को भी Mobile द्वारा Sex का वातावरण बनाने में कंपनी कामयाब हो जाती है। बच्चे को खेलने कूदने की उम्र में व्हीस्पर और कंडोम का प्रचार दिखाकर यह मीडिया और कम्पनियाँ क्या हासिल करना चाहती है जिसका जवाब वह सभ्य जनता जानना चाहती है जिसकी वजह से आज भी देश में संस्कार, सभ्यता और संस्कृति बची हुई है। Film तो Film अब समाचार, कॉटून चैनल, धारावाहिक में बच्चों को Sexi बनाने का मुहिम तीव्र गति से चल रहा है और समय रहते नहीं रोका गया तो Live - in Relationship में adult के साथ-साथ बच्चों को स्कूल में भी खुल्लेआम Projector पर Sex Education के नाम पर यह धंधा चलता रहेगा। भारतीय संस्कारी समाज की जड़े कफी हद तक खोखली हो चुकी है लेकिन जो बची है उन्हें बचाने की मुहिम चलानी होगी और मोबाइल में इसको देखना बहुत कठिन होगा। फोन पर सेक्स तनाव को भी दूर करता है और सुकून भी देता है। रिश्ता पहले से कहीं ज्यादा नजदीकी हो जाता है लेकिन सच यह है कि आप अपने स्वास्थ्य पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को नजरअंदाज नहीं कर सकते, खास तौर पर आपके दिमाग पर इसे रिकॉर्ड किया जा सकता है और आप जोखिम में पड़ सकते हैं। Mobile बड़ी मुसीबत ला सकती है और आपकी निजी जिंदगी को उजागर कर सकती है। यह तब खतरनाक होता है जब आपको इसकी लत लग जाती है और आप पीड़ित होते हैं। आपको खुद तय करना होगा कि फोन सेक्स आपके लिए अच्छा है या बुरा। क्या आपकी और आपके परिवार की छवि प्रभावित होगी? कृपया इसे छोड़ने की कोशिश न करें, लेकिन अपना मन बना लें, क्या यह आपके लिए सही है और क्या आप आगे बढ़ने का जोखिम उठा सकते हैं। लेकिन यह केवल सेल फोन के इस्तेमाल में कटौती करने के बारे में नहीं है। उदाहरण के लिए, जब बच्चे खेल के मैदान पर स्वतंत्र रूप से खेल रहे होते हैं, तो अपने फोन का उपयोग आकर्षक तरीकों से करना उपयुक्त हो सकता है, जैसे कि तस्वीरें लेना, या अपना समय व्यतीत करने के तरीके के रूप में जब आपका बच्चा स्वतंत्रता और लचीलेपन जैसे महत्वपूर्ण कौशल सीख रहा हो। खेल के मैदान में अपने बच्चों के साथ आँख से संपर्क बनाने से उनका आत्मविश्वास बढ़ सकता है और उन्हें अपने आस-पास के वातावरण को सुरक्षित रूप से तलाशने में मदद मिल सकती है। माता-पिता भी अपनी जिम्मेदारी से भाग रहे हैं, तथा बच्चों को Mobile हांथ में डालकर उनको अपना व्यक्तिगत जीवन को जिने का मार्ग बनाते हैं। जिस तरह से आप अपने परिवार के साथ अपने मोबाइल डिवाइस का उपयोग करते हैं, वह आपके रिश्तों को काफी हद तक प्रभावित कर सकता है। Mobile आपको अधिक जुड़ाव का एहसास करा सकता हैं, लेकिन वे आपको और आपके परिवार को व्यक्तिगत रूप से एक-दूसरे से जुड़ने से भी विचलित कर सकते हैं। जबकि कुछ लोगों को काम या आपातकालीन उद्देश्यों के लिए अपने फोन की जांच करने की आवश्यकता होती है, आमने-सामने संचार के माध्यम से सार्थक संबंध बनाने का मॉडल बनाना और उसे प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है। मोबाइल फोन पारिवारिक समय को बर्बाद कर रहा है? कुछ लोगों को अपने सेल फोन को दूर रखने में परेशानी होती है, भले ही इससे परेशानी हो। आजकल video call का भी दौर चल रहा है जिसके वजह से गंदा वातावरण बनते देर नहीं लगता उन्हें इस बात पर नियंत्रण की कमी महसूस हो सकती है कि वे अपना फोन कितनी बार उठाते हैं या कितनी देर तक उसका इस्तेमाल करते हैं। सोसल मीडिया के बढ़ते दवाब की वजह से युवा पीढ़ी कम उम्र में ही Adult हो जा रहे हैं और जिस प्रकार Money के चक्कर में अपने छोटे-छोट बच्चों को Real बनाकर Digital World में छा रहे हैं ताकि उनको Social Pletform से पैसा मिल सके। देश के लिए यह एक सबसे बड़ी चुनौती है जिसपर सरकार को सजग होना होगा और जागरूकता अभियान चलाकर इसपर नकेल कसना होगा।

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

वर्ष:- 14, अंक:- 167 माह:- मई 2025 रू. 10/-

Editor

Brajesh Mishra 9431073769
6206889040
8340360961

editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach@gmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

Principal Editor

Arun Kumar Banka 7782053204
Nilendu Kumar Jha 9431810505

General Manager (H.R)

Triloki Nath Prasad 9308815605

General Manager (Advertisement)

Manish Kamaliya 6202340243
Poonam Jaiswal 9430000482

Joint Editor/Lay-out Editor

Amit Kumar 9905244479
amit.kewalsach@gmail.com

Legal Editor

Amitabh Ranjan Mishra 8873004350
S. N. Giri 9308454485

Asst. Editor

Mithilesh Kumar 9934021022
Sashi Ranjan Singh 9431253179
Rajeev Kumar Shukla 7488290565

Sub. Editor

Arbind Mishra 6204617413
Prasun Pusakar 9430826922

Bureau Chief

Sanket kumar Jha 7762089203

Bureau

Sridhar Pandey 9852168763
Sonu Kumar 8002647553

Photographer

Mukesh Kumar 9304377779

प्रदेश प्रभारी

दिल्ली हेड

संजय कुमार सिन्हा 9868700991

झारखण्ड हेड

ब्रजेश मिश्र (2) 7979769647
7654122344

पश्चिम बंगाल हेड

अजीत दुबे 9433567880
9339740757

मध्यप्रदेश हेड

अभिषेक पाठक 8109932505
8269322711

छत्तीसगढ़ हेड

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश हेड

निर्भय कुमार मिश्रा 9452127278

उत्तराखण्ड हेड

आवश्यकता है

महाराष्ट्र हेड

आवश्यकता है

गुजरात हेड

आवश्यकता है

आंध्र प्रदेश हेड

आवश्यकता है

राजस्थान हेड

आवश्यकता है

पंजाब हेड

आवश्यकता है

हरियाणा हेड

आवश्यकता है

राजस्थान हेड

आवश्यकता है

उड़ीसा हेड

आवश्यकता है

आसाम हेड

आवश्यकता है

हिमाचल हेड

आवश्यकता है

दिल्ली कार्यालय

केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
A-68, 1st Floor,
नागेश्वर तल्ला, शास्त्रीनगर, न्यू
दिल्ली-110052
मो०- 9868700991, 9431073769

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
मो०- 9433567880, 9339740757

झारखण्ड कार्यालय

केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
वैष्णवी इंक्लेव, द्वितीय त्तल,
फ्लैट नं- 2बी
नियर- फायरिंग रेंज
बरियातु रोड, राँची- 834001
मो०- 9308815605

मध्यप्रदेश कार्यालय

केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
द्वारा- अभिषेक कुमार पाठक
हाउस नं.-28, हरसिद्धि कैम्पस
खुशीपुर, चांबड़
भोपाल, मध्य प्रदेश- 462010
मो०- 8109932505,

विशेष प्रतिनिधी

भारती मिश्र 8521308428
बेंकटेश कुमार 8210023343

प्रकाशित आलेख पर आप अपना सुझाव एवं प्रतिक्रिया अवश्य दें।

केवल सच टाइम्स

द्विभाषीय मासिक पत्रिका

हमारा पता है

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14,
मकान संख्या:- 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
सम्पर्क करें:- 9431073769, 8340360961

हमारा ई-मेल

editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

जनवरी 2025

कानूनी सलाह

मिश्रा जी,

फरवरी 2025 अंक आपकी पत्रिका केवल सच टाइम्स का सभी अंक में कानूनी सलाह में शिवानंद गिरी सटीक और आम आदमी के जागरूक करने वाली सलाह को प्रमुखता से देते हैं. क्रिमिनल केस का ट्रॉयल सात दिनों में नहीं होता है तो आरोपी को बहुत सारी सहूलियत मिल जाती है इस प्रकार का सलाह से सटीक जानकारी उपलब्ध होती है। कानूनी सलाह के साथ इन विषयों के सलाह का स्थायी स्तंभ को भी प्रकाशित किया जाए. केवल सच टाइम्स पत्रिका का पृष्ठ भी बढ़ना चाहिए ताकि अन्य खबरों को भी महत्व मिले। फिल्म और खेल की खबरों को युवा पीढ़ी पूरा चाव से पढ़ता है।

● **रौशन सिंह, बाबू बाजार, कोलकाता, प.बं.**

कटघरे में

संपादक महोदय,

आपका संपादकीय सटीक, बेजोड़ और मुद्दो पर सार्थक समीक्षा के साथ होता है। अप्रैल 2025 अंक का संपादकीय कटघरे में अदालत में अपने सभी विचारणीय विषय को प्रमुखता से लिखा है कि आम आदमी का विश्वास अब लोकतंत्र के सबसे मजबूत स्तंभ न्यायपालिका से भी उठने लगा है। किसी भी मुकदमे का रिजल्ट आते आते आरोपी कई कांड कर देता है। जमानत लेने में भी कई प्रकार की धांधली है तथा अग्रिम जमानत के लिए कोर्ट का डेट आते आते पुलिस नहीं पकड़ने के लिए मोटी रकम वसूलती है। आपने सभी बिंदु पर ध्यान खींचा है और बहुत ही सरलता के साथ।

● **राकेश त्रिपाठी, झंडेवलान, करोलबाग, नई दिल्ली**

सलीमपुर हत्याकांड

संपादक महोदय,

केवल सच टाइम्स पत्रिका के पत्रकार संजय सिंह प्रत्येक माह के अपनी खबर में पाठकों को सटीक एवं ज्वलंत जानकारी प्रकाशित करते आ रहे हैं अप्रैल 2025 अंक में संजय सिन्हा की खबर सालिमपुर हत्याकांड पर गरमाई सियासत में कुणाल की हत्या से संबंधित पूरे घटना को छोटी ही सही पर काफी सुदृढ़ जानकारी उपलब्ध कराई है। 17 साल के दलित युवक कुणाल पर विपक्षी खासकर के चंद्रशेखर रावण जैसे सांसद भी मौन बैठे हैं लेकिन जब दलित पर मुसलमान हमला करता है या अन्य तरीके से प्रताड़ित अपमानित शोषण करता है उस समय में चंद्रशेखर रावण जैसे राजनेता चुपचाप मामले पर मौन रखना ज्यादा हितकारी मानते हैं

● **रमेश यादव, गणेश नगर, रोड़ नं.-3 दिल्ली**

अधिवेशन

संपादक महोदय,

केवल सच टाइम्स पत्रिका के 2025 अप्रैल अंक में बहुत ही सटीक खबर कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन से क्या निकला में पत्रकार ने विभिन्न बिंदुओं को केंद्रित करके लिखा है कि आखिर क्या वजह है कि कांग्रेस की हर चाल मोदी के खिलाफ जाने के बजाय कांग्रेस के खिलाफ जा रही है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे में नई पीढ़ी को आगे आने और बुजुर्ग हो चुके लोगों को रिटायर होने की बात प्राथमिकता दी है पूरे भारत के हर प्रखंड तहसील तक कांग्रेस की शक कांग्रेस की साख मजबूत करने की सलाह दिया है भाजपा और कांग्रेस देश की दो बड़ी पार्टी आज आपस की राजनीति में इस कदर फस गई है की धर्म और राष्ट्र सत्ता के आगे बौना हो चुका है

● **मोहित अग्रवाल, अग्रावाल कॉलोनी, गांधी नगर**

पहलगाम

मिश्रा जी,

2025 अंक में पत्रकार अमित कुमार ने अपनी खबर चाहे वह पुलवामा की घटना हो या फिर वर्तमान समय में घटित पहलगाम की एक तरफ भारत के मुसलमान राष्ट्र के प्रति समर्पित दिखते हैं। दूसरी तरफ राजनीति करने वाले भी आतंकवादी हमले को गंभीरता से नहीं लेते लगभग 27 लोगों के निर्मम हत्या सिर्फ धर्म के नाम पर की गई वह भी अपने भारत देश के स्वर्ग जाने जाने वाले जम्मू कश्मीर में और नेहा सिंह राठौर जैसी महिला ताली पीट-पीटकर यह साबित करने में लगी है लगी है कि इसमें आतंकवादी का नहीं नरेंद्र मोदी का साथ है या खबर काफी मार्मिक और उत्तेजित करने वाली है। ऐसे आलेख लिखने के साहस को सलाम करता हूं।

● **मनोज उरांव, करमटोली चौक, राँची, झा०**

दर्दनाक मौत

ब्रजेश जी,

अप्रैल 2025 अंक में आतंकवादी हमले को पूरी गंभीरता से लिखा है। अमित कुमार की खबर आतंकवादी हमले में पर्यटकों की दर्दनाक मौत में सेना की चूक से लेकर सेना की शौर्य पर पठनीय एवं सुकून देने वाली खबर को समीक्षात्मक ढ़ंग से लिखा गया है। मोदी की सरकार ने भारतीय सेनाओं को प्रमुखता से पाकिस्तान में छिपे आतंकवादियों को फोकस करते हुए मौत के घाट उतारने का आदेश दे दिया है जिससे भारत के लोगों को गर्व की अनुभूति महसूस हुई है। खबर काफी विस्तार से एक एक बिंदु पर ध्यान खींचा गया है और तो और इसके राजनीतिक दलों की क्या सोच है उसपर भी गंभीरता से लिखा गया है। सटीक खबर के लिए कुमार को साधुवाद।

● **पंकज सिंह, पाया न.-39, राजा बाजार, पटना**

अन्दर के पन्नों में

मोदी की राष्ट्रवाद से यू-टर्न 13

17

19

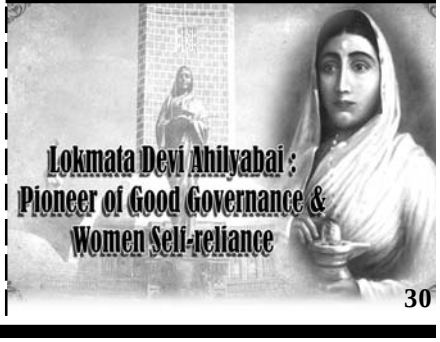

30

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)

पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स

09431016951, 09334110654

डॉ. सुनील कुमार

शिशु रोग विशेषज्ञ सह मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका

एवं 'केवल सच टाइम्स'

एन.सी.- 115, एसबीआई ऑफिसर्स कॉलोनी,

लोहिया नगर, कंकड़बाग, पटना- 800020

फोन- 0612/3504251

सुधीर कुमार

मुख्य संरक्षक सह निदेशक ''**मगध इंटरनेशनल स्कूल**'' टेकारी

'' **केवल सच** '' पत्रिका **एवं** '' **केवल सच टाइम्स** ''

9060148110

sudhir4s14@gmail.com

कैलाश कुमार मौर्य

मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

व्यवसायी

पटना, बिहार

7360955555

एक नजर

संपादकीय व प्रधान कार्यालय:-

- पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्या:- 28/14, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
  e-mail:- kewalsach@gmail.com,
  editor.kstimes@rediffmail.com
  kewalsach_times@rediffmail.com
- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा जय हिन्द प्रेस कंकड़बाग पटना-800020 से मुद्रित एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। **RNI NO.- BIHBIL/2011/49252**
- पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
- सभी प्रकार के वाद - विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।
- आलेख पर किसी को कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।
- किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।
- सभी पद अवैतनिक हैं।
- विज्ञापन की सत्यता की जाँच आप अपने स्तर पर कर लें।
- फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)
- कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।
- **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**
- भुगतान BRAJESH MISHRA को ही करें। किसी प्रतिनिधि को नगद न दें।

A/C No.	:-	20001817444
BANK	:-	State Bank Of India
IFSC Code	:-	SBIN0003564
PAN No.	:-	AKKPM4905A

Contributions/Donations are Invited for the Welfare of Elders/Sr. Citizens for the establishment of
"APNA GHAR" A home for Sr. Citizens of Bihar & Jharkhand Proposed to be Constructed
Under the ageas of " KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN".
KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN
Registered Under the Indian Society Act 21, 1880
East Ashok Nagar, Road No.-14,
Kankarbagh, Patna - 800020
Contact No. :- 09431073769, 9955077308, 9308727077
E-mail :- kewalsachsamajiksansthan33@gmail.com
Reg. No. : 1141 (2009-10), Income Tax No. :12AA/2505-8 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1060-63
APNA GHAR
Now in the State of Bihar & Jharkhand
Help the helpless Elders/Sr. Citizen. For which your
Contribution and Donation are essential.
Your Coopertation in this direction can make a diffrence
in the lives of many Sr. Citizens.
KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN
A/C No. - 0600010202404
Bank Name - United Bank of India
IFSC Code - UTBIOKKB463
Pan No. - AAAAK9339D

● **संजय सक्सेना**
(वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)

हाल के वर्षों में भारतीय राजनीति में जिस तरह से सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच हर मुद्दे पर तलवारें खींची नजर आती थी, उसके बाद ऑपरेशन सिंदूर के दौरान जिस तरह से दोनों धड़ों में एकजुटता देखने को मिल रही है, उससे देश की आम जनता काफी खुश है, वहीं पाकिस्तान में इसके उलट नजारा नजर आ रहा है। पड़ोसी मुल्क में विपक्ष लगातार प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ को कोसने और उन्हें नाकाबिल नेता साबित करने में लगा है। मोदी और शरीफ की तुलना शेर और सियार के रूप में की जा रही है।

बहरहाल, भारत के लिये यह सुखद है कि आतंकवाद के खिलाफ मोदी सरकार के हर कदम पर विपक्ष बिना किसी शर्त के पूरी मजबूती से खड़ा है। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले और उसके जवाब में भारतीय सेना द्वारा चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर के बाद पूरे राजनीतिक परिदृश्य में एक अद्भुत परिवर्तन देखा गया है। विपक्षी दलों ने इस बार न केवल सरकार का समर्थन किया बल्कि सेना के साहस और कार्रवाई की खुलकर सराहना की। इससे पहले उरी और पुलवामा हमलों के बाद जिस तरह से कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों ने सवाल उठाए थे, और बीजेपी ने उन्हें राष्ट्र विरोधी खांचे में रखकर सियासी नुकसान पहुंचाया था, उस पृष्ठभूमि में यह बदलाव बेहद अहम है। यह न केवल राजनीति की परिपक्वता को दर्शाता है, बल्कि यह भी बताता है कि देश की सुरक्षा के मुद्दे पर भारत अब एक स्वर में बोल रहा है। गौरतलब हो, 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 26 निर्दोष पर्यटकों की निर्मम हत्या ने पूरे देश को झकझोर दिया था। इस हमले ने न केवल आम जनता की भावनाओं को आहत किया, बल्कि विपक्षी दलों के लिए भी एक चुनौती खड़ी कर दी थी कि वे इस मुद्दे को किस रूप में लें। कांग्रेस और अन्य प्रमुख दलों ने बिना देर किए केंद्र सरकार को बिना शर्त समर्थन देने की घोषणा की। इससे भी बड़ी बात यह थी कि उन्होंने सुरक्षा और खुफिया तंत्र की संभावित चूक का मुद्दा उठाने के बावजूद, इसे राजनीति का विषय नहीं बनने दिया। यह देश की एकता और संप्रभुता की रक्षा के लिए विपक्ष का

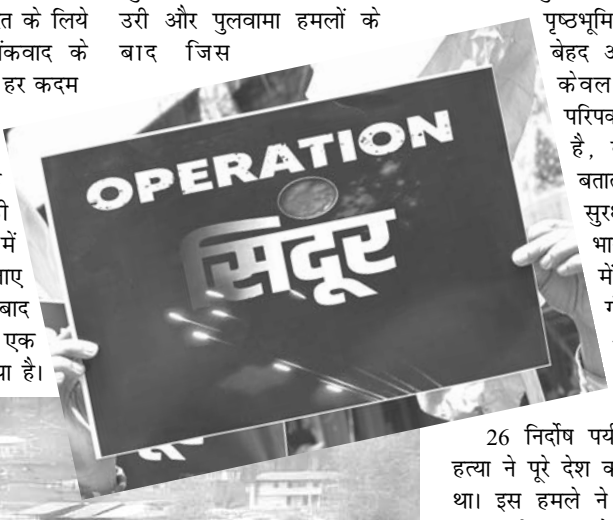

एक परिपक्व और जिम्मेदार रवैया था।

भारतीय सेना ने इस हमले के जवाब में पाकिस्तान में स्थित आतंकी ठिकानों पर ऑपरेशन सिंदूर के तहत सटीक और प्रभावशाली कार्रवाई की। सेना की इस जवाबी कार्रवाई को विपक्ष की ओर से न केवल समर्थन मिला बल्कि सराहना भी हुई। कोई सवाल नहीं, कोई प्रमाण की मांग नहीं, कोई राजनीतिक बयानबाजी नहीं बस एक सुर में सरकार और सेना के साथ खड़े रहने की भावना। 'भारत माता की जय' और 'जय हिंद' के नारों के साथ विपक्षी नेता भारतीय सेना के साथ नजर आए। यह एक ऐसी तस्वीर थी जो 2016 के उरी हमले या 2019 के पुलवामा हमले के बाद नजर नहीं आई थी। उरी हमले के बाद जब भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक की थी, तो कांग्रेस समेत कई विपक्षी दलों ने उस पर सवाल उठाए थे। बीजेपी ने इस मुद्दे को राष्ट्रवाद बनाम राष्ट्र विरोधी के तौर पर पेश करके राजनीतिक लाभ उठाया था। ठीक ऐसा ही पुलवामा के बाद बालाकोट एयर स्ट्राइक के दौरान हुआ था। कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने सबूत मांगे थे, जिसके चलते पार्टी को व्यापक आलोचना का सामना करना पड़ा था। राहुल गांधी ने भी सेना के शौर्य पर विश्वास जताने के साथ-साथ पीएम मोदी पर जवानों के बलिदान की राजनीति करने का आरोप लगाया था। इन बयानों से कांग्रेस को चुनावी मैदान में भारी नुकसान उठाना पड़ा था, लेकिन इस बार कहानी बदली हुई है।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद कांग्रेस ने अपने राजनीतिक कार्यक्रमों को रोक दिया, पार्टी की सर्वोच्च नीति-निर्धारण संस्था कांग्रेस वर्किंग कमिटी की बैठक बुलाई गई और राहुल गांधी ने स्वयं सेना को समर्थन देने का ऐलान किया। प्रियंका गांधी वाड्रा के सुझाव पर कांग्रेस ने अपनी 'संविधान बचाओ' रैली स्थगित कर दी, ताकि सेना के प्रति एकजुटता और राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता का संदेश स्पष्ट रूप से जाए। यहां तक कि कर्नाटक कांग्रेस ने भी अपनी उस सोशल मीडिया पोस्ट को हटा दिया, जिसमें शांति को सबसे बड़ा हथियार बताया गया था जो शायद मौजूदा माहौल में सेना के ऑपरेशन के संदर्भ में गलत संदेश दे सकती थी। कांग्रेस के इस नए रुख के साथ ही अन्य विपक्षी दल भी उसी दिशा में नजर आए। एनसीपी (एसपी) प्रमुख शरद पवार ने प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री से बात करके अपनी पार्टी का पूरा समर्थन देने की घोषणा की। यूपीए सरकार में रक्षा मंत्री रहे ए के एंटनी, जो अक्सर मोदी सरकार के आलोचक

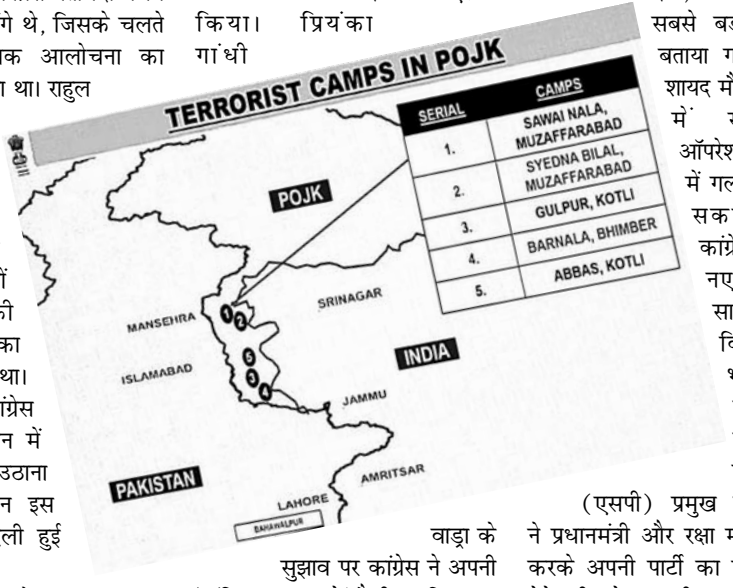

रहे हैं, उन्होंने भी ऑपरेशन सिंदूर को 'एक मजबूत शुरुआत' बताया और सेना की निर्णायक कार्रवाई का समर्थन किया। आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल, जो पहले सर्जिकल स्ट्राइक के बाद राहुल गांधी के शब्दों की आलोचना कर चुके थे, उन्होंने भी इस बार सेना के साहस की प्रशंसा करते हुए कहा कि पूरा देश एकजुट है।

राष्ट्रीय जनता दल के नेता लालू प्रसाद यादव और तेजस्वी यादव ने भी ऑपरेशन सिंदूर की खुलकर सराहना की और जवानों को सलाम किया। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव, जो अक्सर मोदी सरकार के आलोचक रहते हैं, उन्होंने भी इस बार सरकार के सुर में सुर मिलाया और पाकिस्तान पर की गई कार्रवाई की प्रशंसा की। यहां तक कि वामपंथी दलों ने, जो आमतौर पर सैन्य कार्रवाई पर संयम बरतने की बात करते हैं, उन्होंने भी पहलगाम हमले के बाद सरकार और सेना के साथ खड़े होने की बात कही। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (सीपीआई) ने भी माना कि इस बार भारत के पास जवाब देने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। यह पूरा घटनाक्रम भारतीय राजनीति के लिए एक नई दिशा का संकेत है। यह दर्शाता है कि देश की सुरक्षा और संप्रभुता के मुद्दे पर अब राजनीतिक दल न केवल एकजुट हैं, बल्कि अपने पुराने सियासी रवैये की भी समीक्षा कर रहे हैं। कांग्रेस का यह नया रुख जहां उसे राष्ट्रवादी विमर्श में खुद को फिट करने में मदद करेगा, वहीं अन्य विपक्षी दलों के लिए भी यह संदेश है कि जनता अब केवल आरोप-प्रत्यारोप नहीं, बल्कि एकजुटता और जिम्मेदारी की राजनीति देखना चाहती है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत ने एक बार फिर यह संदेश दिया है कि आतंकवाद के खिलाफ उसकी नीति न तो नरम है, न ही विभाजित। यह केवल केंद्र सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति का परिणाम नहीं, बल्कि विपक्ष की परिपक्व भागीदारी का भी प्रतिबिंब है। अगर इस रुख को भविष्य में भी कायम रखा गया, तो यह न केवल देश की आंतरिक राजनीति को परिपक्व बनाएगा, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी भारत की छवि को और सुदृढ़ करेगा।

बात पाकिस्तान की कि जाये तो वहां सेना, सरकार और विपक्ष के बीच तलवारें खींची हुई हैं। भारत के ऑपरेशन सिंदूर से पाकिस्तान की सैन्य और रणनीतिक स्थिति डगमगाई हुई है, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान की सियासत भी बुरी तरह बिखर गई है। जब देश को एकजुट होकर संकट का सामना करना चाहिए, तब पाकिस्तानी नेता एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप में व्यस्त हैं। प्रधानमंत्री और विपक्ष के बीच बढ़ती खींचतान ने पूरे मुल्क को असमंजस में डाल दिया है। पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी ने मौजूदा सरकार पर सेना के साथ मिलीभगत और गलत फैसलों का आरोप लगाया है, वहीं सरकार का कहना है कि इमरान खान जैसे नेता युद्ध के समय भी राष्ट्रविरोधी बयानबाजी से बाज नहीं आ रहे। संसद में तीखी बहस के दौरान विपक्षी नेताओं ने सेना की विफलताओं पर सवाल खड़े किए, जिससे देश की अंतरराष्ट्रीय छवि और कमजोर हुई। इस बीच, पाकिस्तानी सेना और सरकार के बीच भी समन्वय की कमी साफ नजर आ रही है। मीडिया में लीक हो रही जानकारियों के मुताबिक, कई रक्षा फैसलों पर सेना और सरकार की राय अलग-अलग रही है, जिससे फ्रंट पर रणनीतिक भ्रम की स्थिति बनी हुई है। इससे देश के आम नागरिकों में असुरक्षा और निराशा का माहौल है। जानकार मानते हैं कि इस समय पाकिस्तान को सबसे बड़ा खतरा भारत से नहीं, बल्कि अपनी बिखरी हुई राजनीतिक नेतृत्व और कमजोर रणनीतिक सोच से है।●

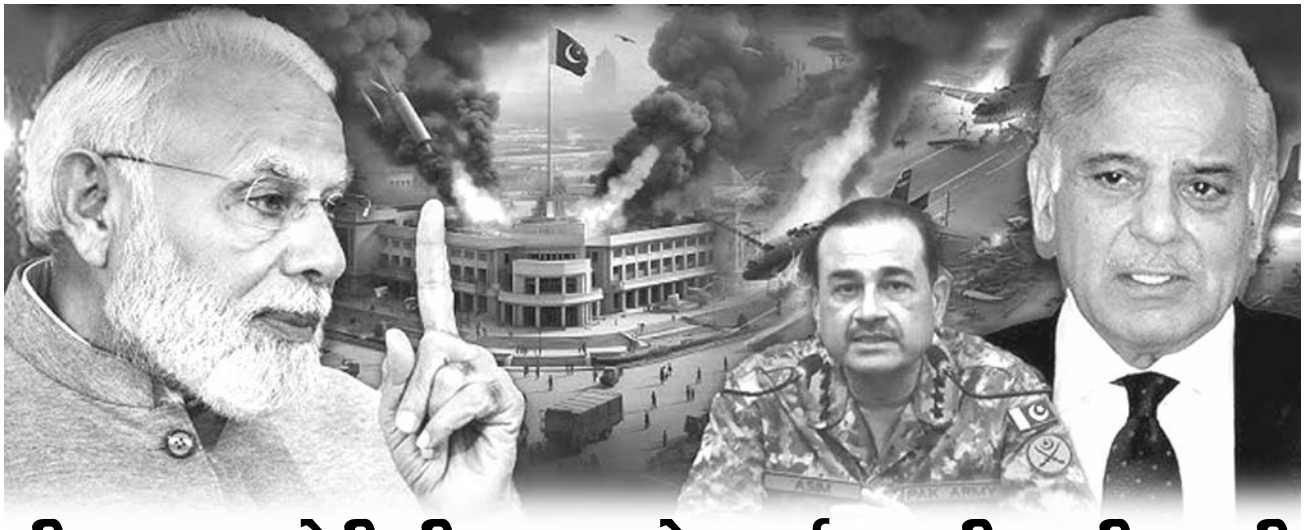

सीजफायर : मोदी की राष्ट्रवाद से यू-टर्न तक की अधूरी कहानी

● अजय कुमार
(वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)

भारतीय राजनीति में ऐसे कई क्षण आते हैं जब कोई घटना देश की जनता और सत्ता प्रतिष्ठान के बीच संबंधों को गहराई से प्रभावित करती है। पाकिस्तान पोषित आतंकवादियों द्वारा 22 अप्रैल को कश्मीर के पहलगाम में 26 हिन्दुओं की हत्या भी इसी की एक कड़ी थी, जिसका हिसाब चुकाने के लिये मोदी सरकार ने पाकिस्तान पर कड़ा कूटनीतिक और सैन्य प्रहार किया, जिसकी शुरूआत पाकिस्तान के साथ दशकों पुराने चले आ रहे सिंधु जल समझौते के निलंबन से हुई तो 'ऑपरेशन सिंदूर' के रूप में भारतीय सेना ने पाकिस्तान में घुस कर ही आतंकवादियों को कब्र में सुला दिया, आपरेशन सिंदूर एक ऐसी ही सैन्य कार्रवाई थी, जो जितनी तेजी से राजनीतिक विमर्श के केंद्र में आई, उतनी ही जल्द वह विवादों और अस्पष्टताओं के भंवर में फंसकर थम गई। यह ऑपरेशन अपने कथित उद्देश्यों के कारण जितना महत्वपूर्ण था, उतना ही इसके अचानक ठहराव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रतिष्ठा पर प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए। जब पहलगाम में आतंकियों ने 26 हिन्दुओं को उनका धर्म पूछ कर मारा तो इसका बदला लेने के लिये पूरा देश और विपक्ष मोदी सरकार के साथ खड़ा हो गया। सबने एक सुर में कहा मोदी सरकार जो कार्रवाई करेगी, उसका हम समर्थन करेंगे, प्रधानमंत्री मोदी ने भी सर्वदलीय बैठक बुलाकर सबको संतुष्ट करने में कोई गुरेज नहीं किया, लेकिन जब सीजफायर किया गया तो मोदी सरकार ने किसी से नहीं पूछा। उन विपक्षी नेताओं को भी भरोसे में नहीं लिया जो उनके साथ खड़े हुए थे, यह बात देशवासियों को पसंद नहीं आई। खासकर बीजेपी और मोदी समर्थक भी इस मुद्दे पर बीजेपी और मोदी सरकार के खिलाफ नजर आये।

गौरतलब हो 'ऑपरेशन सिंदूर' की शुरुआत एक गुप्त अभियान के तौर पर हुई थी, जिसका उद्देश्य कथित रूप से कश्मीर घाटी में आतंक के नेटवर्क को समाप्त करना और पाकिस्तान समर्थित तत्वों को निष्क्रिय करना था। इस ऑपरेशन का नाम 'सिंदूर' रखने के पीछे भावनात्मक और सांस्कृतिक प्रतीक था। सिंदूर, जो भारत में सुहागिन स्त्रियों का प्रतीक है। माना जा रहा था कि इस ऑपरेशन के तहत सुरक्षाबलों को 'फ्री हैंड' दिया गया था और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल के मार्गदर्शन में इसे अंजाम तक पहुंचाया जाना था। ऑपरेशन के शुरुआती दिनों में कुछ महत्वपूर्ण गिरफ्तारियाँ और सीमावर्ती क्षेत्रों में आतंकी ठिकानों पर हमले हुए भी थे। लेकिन जैसे-जैसे दिन बीते, यह ऑपरेशन धीरे-धीरे मीडिया से गायब होता चला गया। फिर एक दिन ऑपरेशन सिंदूर जिस तरह अचानक शुरू हुआ था, उतनी ही चुप्पी से वह थम भी गया। इसके पीछे कई कारण माने जा रहे हैं, जिसकी चर्चा करना यहां जरूरी है। कहा जा रहा कि संयुक्त राष्ट्र और पश्चिमी देशों ने भारत से मानवाधिकारों को लेकर जवाबदेही की मांग की। अमेरिका और यूरोपीय संघ के प्रतिनिधियों ने अप्रत्यक्ष रूप से भारत से 'संवेदनशीलता' बरतने की अपील की। बात देश के भीतर की कि जाये तो ऑपरेशन के चलते

स्थानीय जनता में असंतोष बढ़ने लगा था। स्कूल, कॉलेज बंद होने लगे थे और एक बार फिर घाटी में सुधरते हुए के हालात बिगड़ने लगे थे। मोदी सरकार को आगामी चुनावों में उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में मुस्लिम मतों को प्रभावित करने की चिंता थी। किसी भी प्रकार की कठोर सैन्य कार्रवाई इस वर्ग को और अलग-थलग कर सकती थी। सूत्रों के अनुसार, ऑपरेशन की रणनीति को लेकर रक्षा मंत्रालय और गृह मंत्रालय के बीच मतभेद थे। कुछ वरिष्ठ अधिकारियों का मानना था कि यह समय पूर्ण सैन्य कार्रवाई का नहीं, बल्कि सूक्ष्म कूटनीतिक प्रयासों का था।

बहरहाल, वजह कोई भी हो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अब तक की छवि एक 'निर्णायक और मजबूत नेता' की रही है। 2016 का सर्जिकल स्ट्राइक और 2019 का बालाकोट एयर स्ट्राइक उनके इस रूप की पुष्टि करते हैं। लेकिन ऑपरेशन सिंदूर का अचानक ठहर जाना इस छवि पर धुंध छ ा

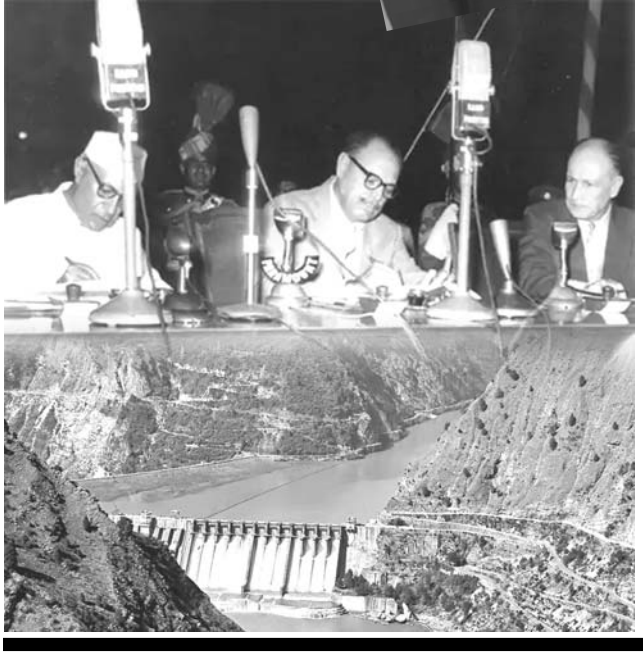

जाता है। समर्थकों को लगता है कि सरकार ने एक बार फिर "कठोर कदम" की शुरुआत करके अंत में 'यू-टर्न' ले लिया। यह एक राजनीतिक चाल अधिक और सुरक्षा नीति कम प्रतीत हुआ। वहीं अभी तक मोदी सरकार के साथ खड़ी कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल अब पूरे घटनाक्रम को 'राजनीतिक नौटंकी' करार देते हुए पूछ रहे हैं कि यदि ऑपरेशन जरूरी था तो उसे अधूरा क्यों छोड़ा गया? और यदि नहीं था, तो इसकी शुरुआत क्यों की गई? पूर्व सैनिकों और रक्षा विश्लेषकों ने भी यह सवाल उठाया कि जब सैनिकों को 'ऑपरेशन मोड' में लाया गया, तो क्या उन्हें केवल राजनीतिक संदेश देने का माध्यम बनाया गया? उधर, सोशल मीडिया और जमीन पर जनता की प्रतिक्रिया मिली-जुली रही। एक ओर राष्ट्रवाद की भावना से भरपूर वर्ग ने इस ऑपरेशन के प्रति उत्साह दिखाया था, लेकिन जब यह बिना निष्कर्ष के थमा, तो वही वर्ग निराश हो गया। दूसरी ओर, शांति और संवाद की वकालत करने वालों ने राहत की सांस ली, पर यह असमंजस बना रहा कि सरकार ने अंततः क्या निर्णय लिया और क्यों। ऑपरेशन सिंदूर की खबरें जब आईं तो प्रमुख चैनलों ने इसे मिशन कश्मीर 2.0 की संज्ञा दी। पैनल चर्चाओं में राष्ट्रवाद की लहरें उठीं, लेकिन जैसे ही ऑपरेशन पर कोई आधिकारिक सूचना आनी बंद हुई, मीडिया ने भी चुप्पी साध ली। इससे यह संदेह और गहरा हुआ कि कहीं यह एक प्रायोजित प्रचार तो नहीं था।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि ऑपरेशन सिंदूर एक प्रतीक बन गया है उस नीति का, जो न तो पूरी तरह सैन्य थी और न ही पूरी तरह कूटनीतिक। इसकी अधूरी परिणति ने यह दिखा दिया कि केवल आक्रामक भाषण और प्रतीकात्मक नामों से जमीनी हकीकत नहीं बदलती। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की छवि पर इस अधूरे ऑपरेशन ने निश्चित रूप से असर डाला है, विशेषकर उस वर्ग में जो उन्हें निर्णायक नेतृत्व का प्रतीक मानता रहा है। आने वाले चुनावों में यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या मोदी इस 'हिचकिचाहट' को छिपा पाने में सफल रहते हैं, या यह उनके राजनीतिक विपक्ष के लिए एक नया हथियार बन जाता है।●

● **अजय कुमार**
(वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)

भारतीय लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक ऐसा मौलिक अधिकार है, जो नेताओं को अपनी बात कहने का अवसर देता है। लेकिन जब यही स्वतंत्रता जिम्मेदारी से अलग होकर घमंड, असंवेदनशीलता और तुच्छ राजनीतिक लाभ का औजार बन जाए, तब यह न केवल लोकतंत्र की आत्मा को घायल करती है, बल्कि देश की एकता और संस्थानों की गरिमा पर भी प्रहार करती है। हाल के दिनों में मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश से कुछ ऐसे ही बयान सामने आए हैं, जो न केवल राजनीतिक मर्यादा की सीमा लांघते हैं, बल्कि उन संस्थाओं को भी घसीट लाते हैं, जिन्हें राजनीति से ऊपर माना जाता है खासकर देश की सेना।

मध्य प्रदेश में भाजपा सरकार के वरिष्ठ मंत्री विजय शाह ने एक चुनावी सभा में सेना की महिला अधिकारी कर्नल सोफिया कुरैशी को लेकर जिस तरह की टिप्पणी की, वह शर्मनाक ही नहीं, बल्कि निंदनीय भी है। उन्होंने सेना में सेवा दे रहीं एक सम्मानित अधिकारी को आतंकवादी की बहन कह डाला। यह शब्द महज राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता का परिणाम नहीं था, बल्कि यह उस मानसिकता का परिचायक था, जिसमें सत्ता की ललक नैतिकता को कुचल देती है। सोफिया कुरैशी, जिन्होंने कई अंतरराष्ट्रीय सैन्य अभियानों में भारत का नेतृत्व किया है, उनके लिए इस तरह के शब्द एक पूरे सैन्य समुदाय के मनोबल पर कुठाराघात हैं। यह केवल एक अफसर नहीं, बल्कि उस महिला की भी बेइज्जती है, जो भारत की सीमाओं की सुरक्षा में दिन-रात तैनात है। इस बयान के बाद देशभर में आक्रोश की लहर दौड़ गई। सोशल मीडिया पर लोगों ने मंत्री को बर्खास्त करने की मांग उठाई। कांग्रेस, आम आदमी पार्टी और अन्य विपक्षी दलों ने इसे भाजपा की सोच करार देते हुए पूरे प्रकरण पर प्रधानमंत्री मोदी की चुप्पी पर भी सवाल खड़े किए। वहीं, मध्य प्रदेश

के मुख्यमंत्री मोहन यादव को भी कटघरे में खड़ा किया गया कि क्या वे अपनी कैबिनेट के मंत्री की इस स्तरहीन भाषा से सहमत हैं? लेकिन इससे भी अधिक गंभीर बात यह थी कि भाजपा के शीर्ष नेतृत्व की ओर से इस बयान पर कोई ठोस कार्यवाही देखने को नहीं मिली। बयानबाजी की राजनीति में मानवीय गरिमा, संस्थागत सम्मान और संवैधानिक मर्यादा को ताक पर रख देना आज के समय की सबसे बड़ी राजनीतिक त्रासदी बन चुकी है। इसी बीच एक और विवाद खड़ा हुआ जब मध्य प्रदेश के उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने एक सभा में यह कह दिया कि 'पूरा देश और सेना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चरणों में नतमस्तक है।' यह कथन न केवल अतिशयोक्ति से भरा हुआ था, बल्कि यह सीधे-सीधे भारतीय सेना की स्वायत्तता और गरिमा पर हमला था। सेना एक संवैधानिक संस्था है, जो न किसी दल की है, न किसी व्यक्ति की। वह

केवल राष्ट्र की है। उसका समर्पण संविधान, राष्ट्र और उसकी अखंडता के प्रति है किसी नेता या सरकार के प्रति नहीं। इस तरह की तुलना, जिसमें सेना को एक राजनीतिक व्यक्तित्व के अधीन बताया जाता है, गहरी चिंता का विषय है। विपक्ष ने इस पर भी तीखी प्रतिक्रिया दी और कहा कि भाजपा अपनी 'व्यक्ति पूजा' की राजनीति में सेना जैसे पवित्र संस्थान को भी लपेटने से नहीं चूकती।

उत्तर प्रदेश में भी राजनीतिक बयानबाजी ने नई हदें पार कीं जब समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता रामगोपाल यादव ने भारतीय वायुसेना की विंग कमांडर व्योमिका सिंह के लिए जातिसूचक टिप्पणी की। उन्होंने सार्वजनिक मंच से उन्हें 'चमार' कहकर संबोधित किया। यह टिप्पणी न केवल अभद्र और अपमानजनक थी, बल्कि यह सामाजिक ताने-बाने को भी छिन्न-भिन्न करने वाली थी। एक तरफ तो दलित समुदाय को सम्मान देने की बात होती है, दूसरी ओर जब एक महिला अधिकारी जिसने अपनी मेहनत, योग्यता और साहस के दम पर एक अहम पद हासिल किया है को केवल उसकी जाति के आधार पर संबोधित किया जाता है, तो यह जातिवाद की जड़ें कितनी गहरी हैं, इसका प्रमाण बन जाता है। इस बयान ने समाज के भीतर जातिगत द्वंद्व को फिर से सतह पर ला खड़ा किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इसे सेना और समाज दोनों का अपमान करार दिया। भाजपा के कई अन्य नेताओं ने भी इस पर तीखी प्रतिक्रिया दी। वहीं, रामगोपाल यादव ने बाद में सफाई दी कि उन्होंने ऐसा किसी दुर्भावना से नहीं कहा, लेकिन सवाल फिर वही

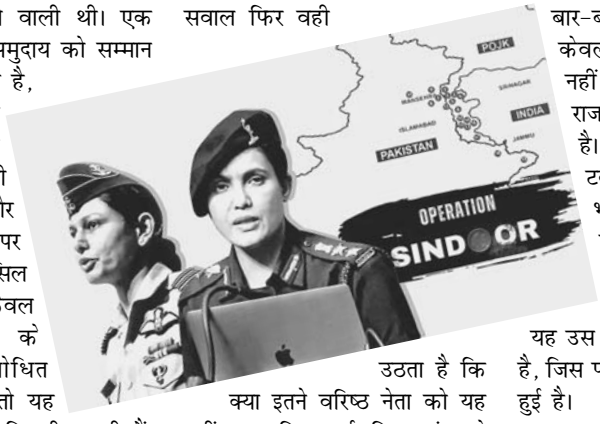

उठता है कि क्या इतने वरिष्ठ नेता को यह नहीं पता कि सार्वजनिक मंच से जातिसूचक शब्द कहना सामाजिक और संवैधानिक दोनों स्तरों पर अपराध है? क्या राजनीति की भाषा इतनी असंवेदनशील हो चुकी है कि उसमें न महिला सम्मान बचा है, न जातीय समरसता और न ही संस्थागत मर्यादा? इन तीनों घटनाओं में एक बात समान है नेताओं की गैर जिम्मेदाराना भाषा, सस्ती लोकप्रियता की भूख, और संवैधानिक संस्थाओं का बार-बार अपमान। यह स्थिति केवल एक दल विशेष की नहीं, बल्कि आज की संपूर्ण राजनीति का दर्पण बन गई है। सेना, जो हमेशा राजनीतिक टकरावों से दूर रही है, उसे भी आज बयानबाजी की जंग में खींचा जा रहा है। यह न केवल लोकतांत्रिक मूल्यों की हत्या है, बल्कि यह उस राष्ट्र भावना का भी क्षरण है, जिस पर भारत की पहचान टिकी हुई है।

यह आवश्यक है कि राजनीतिक दल अपने नेताओं को केवल चुनाव जिताने वाली मशीनें न समझें, बल्कि उन्हें संवैधानिक जिम्मेदारी, भाषा की मर्यादा और सामाजिक संतुलन का पाठ पढ़ाएं। चुनाव आयोग को भी ऐसे बयानों पर स्वत: संज्ञान लेते हुए कठोर निर्देश और दंड का प्रावधान करना चाहिए ताकि यह संदेश स्पष्ट हो जाए कि कोई भी व्यक्ति संविधान से ऊपर नहीं है। मीडिया, जो लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है, उसे भी चाहिए कि वह टीआरपी की दौड़ में इन बयानों को सनसनी की तरह परोसने के बजाय इन पर सार्थक बहस करे और जवाबदेही तय करने में भूमिका निभाए। जनता को भी अब यह तय करना होगा कि वह किन नेताओं को मंच दे रही है। क्या वे ऐसे लोगों को संसद और विधानसभाओं में भेज रही है जो सेना का अपमान करते हैं, महिलाओं को नीचा दिखाते हैं और जातिगत जहर फैलाते हैं? या फिर वे उन नेताओं को चुन रही है जो राष्ट्रहित, संविधान और सामाजिक समरसता को सर्वोपरि मानते हैं? क्योंकि लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत वोट होती है और यदि वोट देने वाला जागरूक है, तो कोई भी नेता देश की गरिमा से खिलवाड़ करने की हिम्मत नहीं कर सकता। इसलिए, अब समय आ गया है कि देश के राजनीतिक विमर्श में मर्यादा, नैतिकता और उत्तरदायित्व फिर से स्थापित किया जाए। सेना को सेना रहने दिया जाए, राजनीति को राजनीति, और समाज को इंसानियत का आईना। यदि यह संतुलन नहीं बना, तो बयानबाजियों का यह जहर धीरे-धीरे लोकतंत्र की जड़ों को खोखला कर देगा और तब उसका इलाज किसी कोर्ट, आयोग या मीडिया के पास नहीं होगा।●

यूपी की राजनीति में गिरती भाषा और बढ़ती ट्रोलनीति

● **अजय कुमार**
(वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)

उत्तर प्रदेश की राजनीति में हाल के दिनों में जिस तरह की तीखी बयानबाजी और सोशल मीडिया के माध्यम से होने वाली बहसों ने तूल पकड़ा है, उसमें सबसे हालिया और विवादास्पद मामला समाजवादी पार्टी के मीडिया सेल द्वारा उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक को लेकर की गई अभद्र टिप्पणी है। यह मामला न सिर्फ एक राजनीतिक टकराव का प्रतीक है, बल्कि यह दर्शाता है कि किस प्रकार डिजिटल युग में राजनीतिक दलों की ओर से किए गए पोस्ट सीधे सामाजिक सौहार्द, नैतिक मर्यादा और राजनीतिक विमर्श की गरिमा पर असर डाल सकते हैं। 16 मई को सपा मीडिया सेल के एक्स (पूर्व में ट्विटर) हैंडल से एक पोस्ट किया गया जिसमें बृजेश पाठक के डीएनए पर आपत्तिजनक टिप्पणी की गई। इस पोस्ट में उपमुख्यमंत्री की तुलना सोनागाछी और जीबी रोड जैसे देश के रेड लाइट एरिया से जोड़ते हुए यह कहा गया कि उनका डीएनए इन क्षेत्रों में नियमित रूप से आने वाले लोगों से मिलाया जाना चाहिए, ताकि उनकी वास्तविक पहचान सामने आ सके। पोस्ट में जिस प्रकार के शब्दों और प्रतीकों का इस्तेमाल किया गया, वह न केवल अभद्र था, बल्कि महिलाओं और वंचित वर्गों के प्रति भी एक अपमानजनक दृष्टिकोण को उजागर करता है। यही कारण था कि इस पोस्ट को लेकर तीव्र राजनीतिक प्रतिक्रिया सामने आई और बृजेश पाठक ने स्वयं इसे अपनी दिवंगत माता-पिता का अपमान बताते हुए सपा प्रमुख अखिलेश यादव से सार्वजनिक रूप से पूछा कि क्या यही उनकी पार्टी की भाषा है। बृजेश पाठक ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि समाजवादी पार्टी के नेताओं ने जिस स्तर की मानसिकता का परिचय इस पोस्ट के माध्यम से दिया है, वह न केवल स्त्री विरोधी है बल्कि पतित सोच को भी दर्शाता है। उन्होंने यह भी कहा कि राजनीति में विचारों का विरोध होता है, लेकिन किसी के चरित्र और पारिवारिक पृष्ठभूमि पर इस तरह के व्यक्तिगत हमले करना राजनीति को गटर में ले जाने जैसा है। उन्होंने अखिलेश यादव से यह स्पष्ट करने को कहा कि क्या यह उनकी पार्टी की अधिकृत नीति है या किसी असंतुलित व्यक्ति की निजी राय, जिसे पार्टी ने अनुमति दे दी। उन्होंने कहा कि समाजवाद के नाम पर सपा जिन बातों को बढ़ावा दे रही है, वह केवल गाली-गलौच, जातिगत विद्वेष और अनैतिक आचरण का पर्याय बन चुका है। इस पूरे मामले ने भाजपा कार्यकर्ताओं और नेताओं को भी सक्रिय कर दिया। लखनऊ महानगर भाजपा अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने हजरतगंज थाने में समाजवादी पार्टी के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई। एफआईआर में यह कहा गया कि यह पोस्ट न केवल जातीय विद्वेष फैलाने वाली है, बल्कि महिलाओं का घोर अपमान करती है और समाज में आपसी सद्भाव को बिगाड़ने का प्रयास करती है। इसके अलावा पार्टी कार्यकर्ताओं ने लखनऊ में विरोध प्रदर्शन करते हुए अखिलेश यादव का पुतला जलाया और समाजवादी पार्टी के मीडिया सेल पर कार्रवाई की मांग की। उन्होंने यह भी कहा कि अगर इस प्रकार की अभद्रता के लिए पार्टी के शीर्ष नेतृत्व की ओर से कोई सार्वजनिक माफी नहीं मांगी जाती, तो वे आंदोलन तेज करेंगे। वहीं अखिलेश यादव ने इस पूरे प्रकरण पर अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि उन्होंने अपने सभी कार्यकर्ताओं से संयमित भाषा का प्रयोग करने को कहा है। लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी जोड़ा कि उपमुख्यमंत्री को भी अपनी भाषा और व्यवहार पर आत्मनिरीक्षण करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि राजनीति में यदि

सत्ता पक्ष की ओर से निरंतर अनर्गल आरोप लगाए जाएंगे, तो विपक्षी कार्यकर्ताओं में भी प्रतिक्रिया की भावना उत्पन्न होगी। अखिलेश का यह बयान इस ओर इशारा करता है कि वे इस मामले में पूरी तरह सपा की सोशल मीडिया टीम के साथ खड़े हैं और उन्होंने यह भी संकेत दिया कि यदि भाजपा को ऐसी टिप्पणियों से आपत्ति है तो उन्हें भी अपने नेताओं के बयानों की जांच करनी चाहिए। बृजेश पाठक ने इसके जवाब में अखिलेश यादव पर एक बार फिर से तीखा प्रहार किया और कहा कि समाजवादी पार्टी अब समाजवाद की प्रयोगशाला नहीं, बल्कि गाली-गलौच की प्रयोगशाला बन चुकी है। उन्होंने कहा कि जिस डॉ. राममनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण के सिद्धांतों को सपा अपनाने का दावा करती है, उनकी आत्मा इस तरह के कृत्यों से व्यथित होगी। पाठक ने यह भी कहा कि राजनीति में नैतिकता और शालीनता होनी चाहिए, लेकिन सपा नेतृत्व ने अब इसे पूरी तरह ताक पर रख दिया है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि यदि विपक्षी दलों को लगता है कि सत्ता पक्ष की नीतियों में कोई त्रुटि है, तो उन्हें तथ्यों के आधार पर बात करनी चाहिए, न कि व्यक्तिगत स्तर पर जाकर अनर्गल आरोप लगाने चाहिए। यह प्रकरण न सिर्फ एक राजनेता के मान-सम्मान से जुड़ा है, बल्कि यह पूरे लोकतंत्र की परिपक्वता पर भी सवाल खड़ा करता है। सोशल मीडिया आज राजनीति का एक अत्यंत प्रभावशाली मंच बन चुका है। लेकिन जिस प्रकार से राजनीतिक दलों की ओर से इस मंच का उपयोग अब मर्यादाहीन और असंयमित भाषा के लिए किया जा रहा है, वह बेहद चिंताजनक है। यह केवल एक दल या एक नेता का मुद्दा नहीं है, बल्कि पूरे राजनीतिक विमर्श की गिरती गुणवत्ता का प्रमाण है। राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में स्वस्थ आलोचना एक अनिवार्य तत्व होती है, लेकिन जब यह आलोचना निचले स्तर पर जाकर निजी जीवन, पारिवारिक पृष्ठभूमि और जातिगत पहचान पर केंद्रित हो जाए, तो इससे न केवल राजनीतिक वातावरण दूषित होता है, बल्कि आम जनता के बीच भी राजनीति के प्रति विश्वास में गिरावट आती है। इस घटनाक्रम से यह भी स्पष्ट होता है कि राजनीतिक दलों को अपने सोशल मीडिया प्रबंधन के लिए केवल तकनीकी दक्षता नहीं, बल्कि वैचारिक परिपक्वता और सामाजिक जिम्मेदारी का भी ध्यान रखना चाहिए। यह आवश्यक है कि सोशल मीडिया टीमों को केवल पार्टी लाइन का प्रचार करने तक सीमित न रखा जाए, बल्कि उन्हें यह भी सिखाया जाए कि भाषा की मर्यादा और समाज की संवेदनाओं का आदर किस प्रकार किया जाता है। इस दिशा में अगर सख्ती नहीं बरती गई, तो आने वाले समय में राजनीतिक संवाद केवल ट्रोल संस्कृति में सिमटकर रह जाएगा। साथ ही यह मामला महिलाओं के प्रति सम्मान और सामाजिक चेतना से भी जुड़ा हुआ है। जिस प्रकार से पोस्ट में रेड लाइट क्षेत्रों और वहाँ काम करने वाली महिलाओं को उपहास का माध्यम बनाया गया, वह स्त्री विरोधी मानसिकता की ओर इशारा करता है। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की बात करने वाले दल यदि इस प्रकार की अभद्रताओं को संरक्षण देते हैं, तो यह न केवल पाखंड है बल्कि उस समावेशी समाज के खिलाफ एक सीधा प्रहार है जिसकी कल्पना संविधान करता है।

सेवा में,
श्रीमान थाना प्रभारी,
थाना - हजरतगंज
जनपद लखनऊ।
महोदय,
निवेदन है कि दिनांक 16 मई 2025 को Samajwadi Party Media Cell (@mediacellsp) द्वारा ट्विटर (एक्स) अकाउंट से एक अत्यंत आपत्तिजनक, अभद्र, और मर्यादाहीन पोस्ट की गई, जिसमें उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय उप मुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक जी के बारे में अश्लील भाषा, अनर्गल आरोप, और मानसिक प्रताड़ना देने वाली बातें कही गई हैं। इस पोस्ट का उद्देश्य उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा को धूमिल करना तथा उनकी छवि को ठेस पहुँचाना है। जो बातें लिखी गई हैं उन बातों से उप मुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक जी के आदरणीय माता जी और पिता जी के बारे में भी बहुत गलत बोला गया है। पोस्ट में प्रयुक्त भाषा – जैसे कि "G8 रोड", आदि – अत्यंत घिनौनी, अपमानजनक और मानहानिकारक है। यह न केवल एक जनप्रतिनिधि पर सीधा हमला है, बल्कि पूरे संवैधानिक मूल्यों की अवहेलना भी है। समाजवादी मीडिया सेल ने ऐसा मर्यादाहीन पोस्ट/ट्वीट करके सोशल मीडिया का दुरुपयोग किया है जिससे न केवल उप मुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक जी की छवि धूमिल हुई है साथ ही साथ इस प्रदेश की लोकतंत्रता को भी धूमिल कर दिया है।
उक्त ट्वीट/पोस्ट का URL https://x.com/mediacellsp/status/1923396626321920161?t=xnvfBjcY3dccAbK19PstgQ&s=19 और उक्त ट्वीट/पोस्ट की एक छायाप्रति इसस पत्र के संलग्न है।
अतः आपसे निवेदन है कि उपरोक्त प्रकरण में तत्काल प्रभाव से ट्विटर हैंडल @mediacellsp तथा संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कर कर अविलंब उचित कार्यवाही करने की कृपा करें।
लखनऊ
प्रार्थी

आखिरकार यह पूरा विवाद इस बात की ओर संकेत करता है कि भारतीय राजनीति को अब विचारधारा की बजाय ट्रोलिंग और बदजुबानी के रास्ते पर धकेला जा रहा है। यह जरूरी है कि देश के सभी राजनीतिक दल, चाहे वे सत्ता में हों या विपक्ष में, इस प्रवृत्ति पर गंभीर आत्ममंथन करें। राजनीतिक विमर्श को गरिमामय बनाना केवल भाषणों और घोषणाओं से नहीं होगा, बल्कि वह नेताओं और उनके संगठनों की वास्तविक नीयत और कार्यशैली से प्रकट होगा। अगर इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिए ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले वर्षों में यह संभावना प्रबल है कि राजनीति में वैचारिक संघर्ष के स्थान पर व्यक्तिगत अपमान और नैतिक पतन ही मुख्य हथियार बन जाएंगे। यह भारतीय लोकतंत्र के लिए एक खतरनाक संकेत होगा और इसका दुष्परिणाम देश की जनता को ही भुगतना पड़ेगा।●

राष्ट्रवाद के दौर में राहुल की जातिवादी राजनीति

● अजय कुमार
(वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)

बिहार की राजनीति एक नए दौर में प्रवेश कर रही है और इस दौर के केंद्र में इस बार राहुल गांधी हैं। जब पूरा देश 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद राष्ट्रवाद की राजनीति की ओर फिर से झुक गया, राहुल गांधी ने इसके ठीक उलट जातीय जनगणना और सामाजिक न्याय को अपनी राजनीतिक प्राथमिकता बना लिया है। यह वही बिहार है, जिसने कभी मंडल राजनीति की नींव रखी थी और जहां जातीय समीकरण अब भी हर चुनाव में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। ऐसे में राहुल गांधी का यह फोकस न केवल एक रणनीतिक चुनावी दांव है, बल्कि यह संकेत भी है कि कांग्रेस अब केवल राष्ट्रीय मुद्दों पर नहीं, बल्कि क्षेत्रीय राजनीति की नब्ज पर भी हाथ रखना चाहती है।

बीते पांच महीनों में राहुल गांधी बिहार के चार दौरे कर चुके हैं और हर बार उन्होंने अलग-अलग जिलों को चुना है।

यह चयन यूं ही नहीं है, बल्कि हर दौरे के पीछे सामाजिक समूहों की स्पष्ट गणना है। दरभंगा में उन्होंने दलित छात्रों से मिलने की कोशिश की, लेकिन प्रशासन ने उन्हें अंबेडकर छात्रावास में जाने की अनुमति नहीं दी। इसके बावजूद राहुल गांधी ने हार नहीं मानी। उन्होंने पदयात्रा शुरू की, पुलिस और प्रशासनिक अफसरों से बहस की और आखिरकार टाउन हॉल में शिक्षा न्याय संवाद के जरिए अपनी बात रखी। यह कोई साधारण राजनीतिक दौरा नहीं था, बल्कि प्रतीकों से भरा हुआ एक बड़ा संदेश था। राहुल गांधी ने दरभंगा में छात्रों से कहा कि देश की 90 फीसदी आबादी के पास कोई अवसर नहीं है। उन्होंने पूछा कि उच्च नौकरशाही में आपके कितने लोग हैं? डॉक्टरी पेशे में आपके कितने लोग हैं? शिक्षा व्यवस्था में आपके कितने लोग हैं? और फिर खुद ही जवाब दिया "जीरो"। उन्होंने आगे कहा कि मनरेगा की सूची में मजदूरों की संख्या देखिए, वह 90 प्रतिशत आबादी से ही भरी हुई है। लेकिन जब बात सत्ता, संपत्ति और ठेकेदारी की आती है, तो सारा पैसा केवल 8 से 10 प्रतिशत लोगों के पास पहुंच जाता है। राहुल गांधी ने इसे लोकतंत्र की सबसे बड़ी विफलता बताया और कहा कि जब तक सामाजिक रूप से वंचित वर्ग एकजुट नहीं होंगे, तब तक कोई बदलाव संभव नहीं है। राहुल गांधी की यह बात बिहार जैसे राज्य में खास असर डाल सकती है, जहां

जातीय आधार पर लोगों की पहचान और उनकी सामाजिक स्थिति गहराई से जुड़ी हुई है। खास बात यह भी है कि राहुल गांधी केवल भाषणों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उन्होंने दलित समाज के साथ वक्त बिताने और उनकी संस्कृति को समझने का प्रयास किया है। पटना के एक मॉल में उन्होंने दलित समाज के लोगों के साथ 'फुले' फिल्म देखी, जो सामाजिक क्रांति के अग्रदूत महात्मा फुले के जीवन पर आधारित है। यह एक संदेश था कि कांग्रेस अब दलित राजनीति को केवल चुनावी गणित नहीं, बल्कि वैचारिक जिम्मेदारी मान रही है।

हालांकि, राहुल गांधी का यह अभियान राजनीतिक टकराव से अछूता नहीं रहा। दरभंगा दौरे के दौरान पुलिस प्रशासन ने उन्हें छात्रावास में प्रवेश से रोका, जिसे कांग्रेस ने दलितों से संवाद रोकने की साजिश करार दिया। प्रियंका गांधी ने सोशल मीडिया पर इसे दलित विरोधी रवैया बताते हुए बिहार सरकार पर हमला किया और लिखा कि अगर एक नेता दलित छात्रों से मिलना चाहता है तो उसमें क्या गलत है? दूसरी ओर प्रशासन का कहना है कि भारत में कहीं भी छात्रावासों में राजनीतिक कार्यक्रम की अनुमति नहीं दी जाती, इसलिए उन्हें टाउन हॉल में अनुमति दी गई थी। बिहार में कांग्रेस की यह सक्रियता महज बीजेपी के खिलाफ नहीं है, बल्कि यह सहयोगी दल आरजेडी के लिए भी चुनौती बनती जा रही है। दरअसल, जिस प्रकार से राहुल गांधी सीधे तौर पर दलित-पिछड़े वर्ग को संबोधित कर रहे हैं, उससे आरजेडी का परंपरागत वोट बैंक खिसक सकता है। यही कारण है कि कुछ राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि बिहार में कांग्रेस अब आरजेडी को भी राजनीतिक रूप से प्रतिद्वंद्वी मानने लगी है। ठीक वैसे ही जैसे दिल्ली में कांग्रेस ने आम आदमी पार्टी के खिलाफ मोर्चा खोला, बिहार में आरजेडी पर कांग्रेस की निगाह टिकी है।

लोकसभा चुनाव 2024 में कांग्रेस और आरजेडी की स्थिति लगभग बराबर रही। लेकिन यह बराबरी कई समीकरणों पर आधारित थी, जैसे पप्पू यादव का कांग्रेस के समर्थन में खड़ा होना। अब जब विधानसभा चुनाव नजदीक हैं, कांग्रेस शायद खुद को आरजेडी

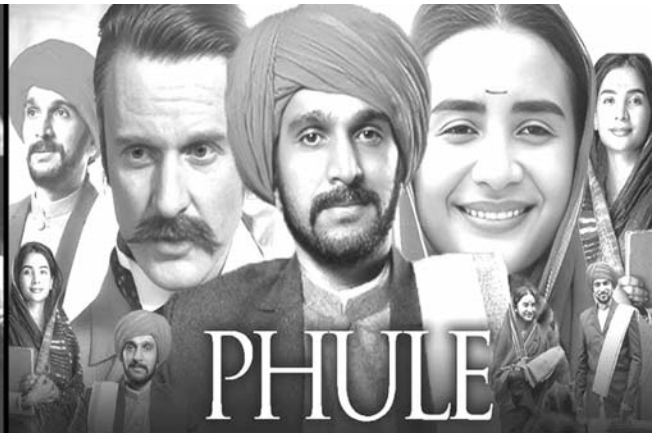

की छाया से निकालकर स्वतंत्र ताकत के रूप में स्थापित करना चाहती है। यही वजह है कि राहुल गांधी के कार्यक्रमों में जातिगत न्याय, सामाजिक प्रतिनिधित्व, शिक्षा और रोजगार जैसे मुद्दे बार-बार सामने आते हैं, जो कि आरजेडी की पारंपरिक राजनीति का मूल आधार रहे हैं। राहुल गांधी लगातार यह भी कहते रहे हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार जातिगत जनगणना को लेकर दबाव में आई और उन्हें अंततः इसे स्वीकार करना पड़ा। कांग्रेस इसे अपनी जीत के रूप में प्रचारित कर रही है और राहुल गांधी बार-बार दोहरा रहे हैं कि जब तक समाज की सही तस्वीर हमारे पास नहीं होगी, तब तक न्याय संभव नहीं है। यही नहीं, उन्होंने यह भी कहा कि निजी संस्थानों में आरक्षण लागू किया जाना चाहिए और एससी-एसटी सब-प्लान का बजट पारदर्शी ढंग से लागू हो। बीजेपी की रणनीति इस पूरे परिदृश्य में अलग है। 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्रवाद की भावना को फिर से जगाने की कोशिश की जा रही है। इसका असर भी दिखा है, लेकिन बिहार में राहुल गांधी की जातीय राजनीति के सामने बीजेपी को भी अब जवाब देना पड़ रहा है। बीजेपी नेता बार-बार यह कह रहे हैं कि जातीय जनगणना का क्रेडिट कांग्रेस नहीं ले सकती, क्योंकि इसे लागू करने का फैसला तो एनडीए सरकार ने किया है। फिर भी राहुल गांधी लगातार इसे अपनी उपलब्धि के रूप में जनता के सामने रख रहे हैं। यह दिलचस्प है कि जब राहुल गांधी को दरभंगा में छात्रों से मिलने से रोका गया, उन्होंने इसे उसी तरह से प्रचारित किया जैसे उन्होंने लोकसभा में बोलने न दिए जाने की घटनाओं को किया था। उनका

यह तरीका विपक्ष को एक पीड़ित की तरह पेश करने का है, जो कि सत्ताधारी दल के अहंकार और तानाशाही के खिलाफ लड़ रहा है। यह छवि जनता के बीच एक भावनात्मक जुड़ाव पैदा करती है, खासकर तब जब मुद्दा दलित या पिछड़े वर्ग से जुड़ा हो।

कुल मिलाकर, राहुल गांधी ने बिहार चुनावों के लिए एक ऐसी पिच तैयार की है, जो अब तक बीजेपी और आरजेडी दोनों से अलग है। वह खुद को सामाजिक न्याय के एक नए प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं और इसमें उन्हें सीमित सफलता भी मिलती दिख रही है। अब यह देखना होगा कि बिहार की जनता इस नई कांग्रेस को कितनी गंभीरता से लेती है। क्या राहुल गांधी का जातीय न्याय का एजेंडा चुनाव में निर्णायक साबित होगा? क्या कांग्रेस आरजेडी को पछाड़कर प्रमुख विपक्ष बन पाएगी? और सबसे बड़ा सवाल, क्या राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस वह जनाधार फिर से हासिल कर पाएगी जो कभी उसका हुआ करता था? बिहार की राजनीतिक बिसात पर बिछी यह चालें आने वाले दिनों में और रोचक मोड़ लेंगी, लेकिन इतना तय है कि राहुल गांधी ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि वह सिर्फ संसद तक सीमित नेता नहीं, बल्कि जमीनी संघर्ष करने वाले राजनीतिक खिलाड़ी भी हैं। उनकी यह कोशिश, चाहे सफल हो या असफल, भारतीय राजनीति में एक नई बहस को जन्म दे चुकी है एक ऐसी बहस जो सामाजिक न्याय को फिर से केंद्रीय मुद्दा बना रही है।●

RJD chief Lalu Prasad Yadav expels elder son Tej Pratap from party and family after his 'I am in relationship for 12 years' post

Dr. Mohan Yadav

Rashtriya Janata Dal Chief Lalu Prasad Yadav today expelled his eldest son Tej Pratap Yadav, MLA, from the party for six years, and from his family. In a social media post, Lalu Prasad Yadav, said that the decision for expulsion of Tej Pratap Yadav from the RJD as well as from the family was taken following his "most irresponsible act". Yadav said that the activities, public conduct and irresponsible behavior of his eldest son were not in accordance with his family values and traditions. Ignoring moral values in personal life weakens collective struggle for social justice, Yadav wrote, stating that under such circumstances, he removed Tej Pratap from the party and family. "From now on, Tej Pratap Yadav will not have any role of any kind in the party and family and he is expelled from the party for six years," Yadav added. The RJD chief further said that his eldest son Tej Pratap Yadav was capable of seeing the good and bad and merits and demerits of his personal life, and those who will have relations with him should take their own decisions. Speaking about conduct in public life, Yadav said that his family members always followed it.

The decision by the RJD chief came after a video and photograph of Tej Pratap Yadav with a woman, Anushka Yadav, went viral on social media on Saturday in which it was claimed that he has been in a relationship with the woman for 12 years. However, later Tej Pratap pleaded that his social media account was hacked. Tej Pratap Yadav got married to Aishwarya Rai, grand daughter of former CM Daroga Rai, in May 2018. The divorce case between the two is going on in the court. Meanwhile, the Leader of Opposition in Bihar assembly Tejaswi Prasad Yadav, trying to avoid queries on the matter, said it was all the personal decisions of his elder brother. Tejaswi Yadav firmly stated that he does not tolerate such matters and his party is working hard for the people of Bihar. "Political life and personal life are different and he has the right to make his personal decisions," Yadav maintained.

He further said that the RJD chief has already taken a decision and has made his feelings clear on this issue.

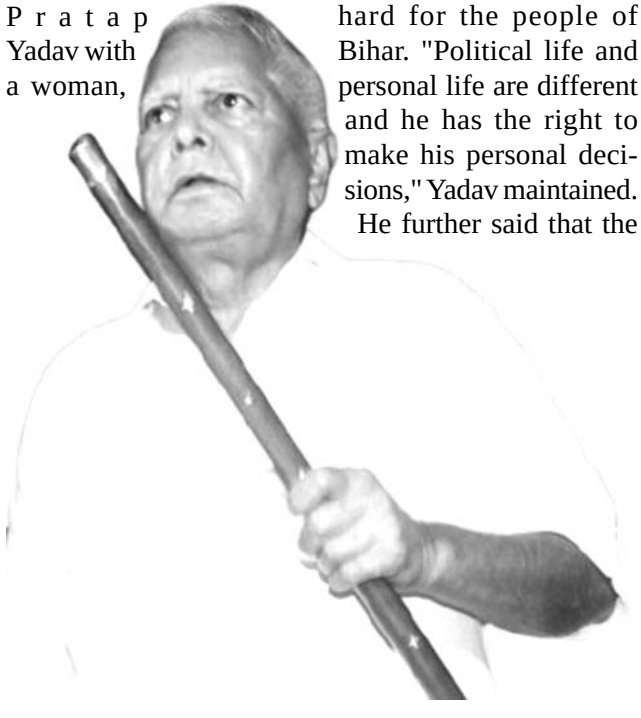

Lalu Prasad Yadav @laluprasadrjd · 37m

निजी जीवन में नैतिक मूल्यों की अवहेलना करना हमारे सामाजिक न्याय के लिए सामूहिक संघर्ष को कमज़ोर करता है। ज्येष्ठ पुत्र की गतिविधि, लोक आचरण तथा गैर जिम्मेदाराना व्यवहार हमारे पारिवारिक मूल्यों और संस्कारों के अनुरूप नहीं है। अतएव उपरोक्त परिस्थितियों के चलते उसे पार्टी और परिवार से दूर करता हूँ। अब से पार्टी और परिवार में उसकी किसी भी प्रकार की कोई भूमिका नहीं रहेगी। उसे पार्टी से 6 साल के लिए निष्कासित किया जाता है।

अपने निजी जीवन का भला -बुरा और गुण-दोष देखने में वह स्वयं सक्षम है। उससे जो भी लोग संबंध रखेंगे वो स्वविवेक से निर्णय लें। लोकजीवन में लोकलाज का सदैव हिमायती रहा हूँ। परिवार के आज्ञाकारी सदस्यों ने सावर्जनिक जीवन में इसी विचार को अंगीकार कर अनुसरण किया है। धन्यवाद।

IAS के सिर पर रखा गमला, विपक्ष ने दे मारा ये तंज?

नीतीश कुमार क्यों कर रहे अजीब हरकतें

● **अमित कुमार**

बिहार के सीएम नीतीश कुमार किसी न किसी वजह से चर्चा में रहते हैं, लेकिन पिछले कुछ समय से वे अपनी अजीब हरकतों की वजह से सुर्खियों में आ रहे हैं। अब जो हरकत उन्होंने की, उसे देखकर पूरे देश और सोशल मीडिया में उनकी चर्चा हो रही है। इसे उनकी हेल्थ से भी जोड़कर देखा जा रहा है। बता दें कि यह पहली बार नहीं है जब नीतीश कुमार ने कोई अजीब हरकत की है। एक बार वे पीएम मोदी के पैर छूने की कोशिश कर रहे थे, वहीं एक दफा वे राष्ट्रगान के बीच में ही बात करने लगे थे।

दरअसल, पटना के एलएन मिश्रा संस्थान में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान नीतीश कुमार ने अपर मुख्य सचिव (शिक्षा) एस सिद्धार्थ द्वारा भेंट किए गए गमले को उनके सिर पर रख दिया। इस घटना ने वहां मौजूद लोगों को हैरान कर दिया और इसका वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो गया। विपक्षी राष्ट्रीय जनता दल (राजद) ने इस घटना को लेकर नीतीश की 'मानसिक स्थिति' पर सवाल उठाए हैं।

☞ **गमला लेकर सिद्धार्थ के सिर पर रखा :-** बता दें कि कार्यक्रम में नीतीश कुमार ने लगभग 10 करोड़ रुपए की परियोजनाओं का शिलान्यास किया और 20 नवनियुक्त फैकल्टी सदस्यों को नियुक्ति पत्र सौंपे। इसी दौरान एस सिद्धार्थ ने मुख्यमंत्री को एक गमला भेंट किया। नीतीश ने गमला लेते ही उसे सिद्धार्थ के सिर पर रख दिया। वहां मौजूद लोग यह देखकर स्तब्ध रह गए, जबकि कुछ दर्शक मुस्कुराते नजर आए। सिद्धार्थ ने तुरंत गमला हटाया और वहां से चले गए।

☞ **विपक्ष ने दे मारा तंज :-** इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर वायरल होने के बाद राजद ने नीतीश कुमार पर तीखा हमला बोला। राजद प्रमुख लालू प्रसाद की बेटी रोहिणी आचार्या ने वीडियो शेयर करते हुए लिखा, ''दिमाग पर हो चुका विक्षिप्तपन का हमला। चाचा रख दे रहे हैं अपने अधिकारी के माथे पर गमला।'' वहीं, राजद प्रवक्ता मृत्युंजय तिवारी ने इस घटना को चौंकाने वाला और शर्मनाक बताया। उन्होंने कहा, नीतीश कुमार की गतिविधियां राज्य को शर्मसार कर रही हैं। यह दर्शाता है कि उनका दिमाग उनके नियंत्रण में नहीं है। वे नौकरशाहों के एक समूह द्वारा नियंत्रित किए जा रहे हैं। वे बिहार के अब तक के सबसे कमजोर मुख्यमंत्री हैं।

☞ **मोदी के पैर छूने की कोशिश :-** बता दें कि यह पहली बार नहीं है जब नीतीश कुमार की हरकतें चर्चा में आई हैं। मार्च में पटना में सेपक टकरा वर्ल्ड कप के उद्घाटन के दौरान राष्ट्रगान शुरू होने से ठीक पहले वे अचानक मंच छोड़कर चले गए थे। इसके अलावा, पिछले साल नवंबर में दरभंगा में एक सार्वजनिक कार्यक्रम में उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पैर छूने की कोशिश की थी, जिसे लेकर भी उनकी आलोचना हुई थी।

☞ **क्यों हाई हुआ बिहार का सियासी पारा :-** इस ताजा घटना ने बिहार की सियासत को गरमा दिया है। राजद ने इसे नीतीश सरकार की कमजोरी और अस्थिरता का प्रतीक बताया है, जबकि सत्तारूढ़ जदयू की ओर से अभी तक इस मामले पर कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है। सोशल मीडिया पर भी लोग इस घटना को लेकर तरह-तरह की टिप्पणियां कर रहे हैं। नीतीश कुमार की इस हरकत ने एक बार फिर उनके नेतृत्व और व्यवहार पर सवाल खड़े कर दिए हैं। यह देखना बाकी है कि इस घटना का बिहार की राजनीति पर क्या असर पड़ता है।

ओवैसी का बिहार में बड़ा दांव

महागठबंधन के साथ गठजोड़ की कोशिश

● अमित कुमार

ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुसलमीन (AIMIM) के प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर नया गेमप्लान बना रहे हैं। ऑपरेशन सिंदूर से अपने राष्ट्रवादी बयानों से चर्चा में आए ओवैसी अब बिहार विधानसभा चुनावों की तैयारियों में जुटे हैं। सूत्रों के अनुसार अब वो महागठबंधन से जुड़ना चाहते हैं। अब तक विपक्षी इंडिया गठबंधन से दूरी बनाए रखने वाली एआईएमआईएम अब राष्ट्रीय जनता दल (RJD) के नेतृत्व वाले महागठबंधन में शामिल होने की जुगत में है। महागठबंधन में आरजेडी के साथ कांग्रेस और वामपंथी दल पहले से ही शामिल हैं।

☞ **महागठबंधन के साथ गठजोड़ की कोशिश :-** 'द इंडियन एक्सप्रेस' की एक रिपोर्ट के अनुसार, बिहार में एआईएमआईएम के नेता आरजेडी नेताओं के साथ लगातार संपर्क में हैं। पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता आदिल हसन ने कहा, 'हम महागठबंधन के साथ गठबंधन करने को इच्छुक हैं और इस दिशा में सकारात्मक सोच रखते हैं। हमारी विचारधारा भाजपा को हराने और बिहार को सशक्त बनाने की है। हमारी लड़ाई भी कांग्रेस की तरह भाजपा के खिलाफ है।'

एआईएमआईएम ने आगामी विधानसभा चुनाव में 243 में से 50 से अधिक सीटों पर चुनाव लड़ने की योजना बनाई है। हालांकि, पार्टी सूत्रों का कहना है कि अगर आरजेडी और कांग्रेस गठबंधन में शामिल करने को तैयार होते हैं, तो वह कम सीटों पर भी चुनाव लड़ने को राजी है।

☞ **2020 के प्रदर्शन से उत्साहित ओवैसी :-** एआईएमआईएम का यह उत्साह 2020 के विधानसभा चुनाव में उसके शानदार प्रदर्शन से आया है। तब पार्टी ने बसपा और राष्ट्रीय लोक समता पार्टी (आरएलएसपी) के साथ तीसरा मोर्चा बनाया था और 20 सीटों पर चुनाव लड़कर 5 सीटें जीती थीं। इन सीटों पर पार्टी को 14.28% वोट मिले थे। वहीं, बसपा ने 78 सीटों पर लड़कर सिर्फ एक सीट जीती, जबकि आरएलएसपी 99 सीटों पर खाता भी नहीं खोल पाई।

☞ **आरजेडी पर टिका फैसला :-** हालांकि, अभी तक आरजेडी और कांग्रेस के साथ गठबंधन को लेकर कोई औपचारिक बातचीत शुरू नहीं हुई है। एआईएमआईएम के नेताओं का कहना है कि विधानसभा में मुलाकातों के दौरान आरजेडी नेता सुझाव देते हैं कि साथ मिलकर चुनाव लड़ना चाहिए। लेकिन अंतिम फैसला आरजेडी को ही लेना है। आदिल हसन ने कहा, 'हम गठबंधन के लिए कोशिश कर रहे हैं। अगर यह नहीं हो पाता, तो जिम्मेदारी आरजेडी की होगी। ऐसी स्थिति में हम बिहार के मुस्लिम संगठनों से संपर्क करेंगे।'

☞ **सीमांचल में मजबूत पकड़ :-** एआईएमआईएम की ताकत बिहार के सीमांचल क्षेत्र में है, जिसमें अररिया, पूर्णिया, कटिहार और किशनगंज जिले शामिल हैं। 2020 में पार्टी ने इसी क्षेत्र की पांच मुस्लिम-बहुल सीटें जीती थीं। हालांकि, जून 2022 में पार्टी को बड़ा झटका लगा, जब उसके चार विधायक मुहम्मद इजहार अस्फी, शहनवाज आलम, सैयद रुकनुद्दीन और अजहर नईमी आरजेडी में शामिल हो गए।

☞ **महागठबंधन का 'वोटकटवा' वाला आरोप :-** महागठबंधन पहले ही एआईएमआईएम पर "भाजपा की बी-टीम" होने का आरोप लगा चुका है। उसका दावा है कि ओवैसी की पार्टी महागठबंधन के वोट काटकर "स्पॉइलर" की भूमिका निभाती है। इस आरोप के बीच ओवैसी का महागठबंधन के साथ आने की कोशिश बिहार की सियासत में नया मोड़ ला सकती है। बिहार की सियासत में ओवैसी की रणनीति और महागठबंधन का रुख आने वाले दिनों में साफ होगा। अगर यह गठजोड़ बनता है, तो यह बिहार में विपक्षी एकता को मजबूत कर सकता है। लेकिन अगर बात नहीं बनती, तो एआईएमआईएम अपने दम पर मुस्लिम-बहुल सीटों पर मजबूत दावेदारी पेश कर सकती है। फिलहाल, सारी निगाहें आरजेडी के अगले कदम पर टिकी हैं।

UP Shocker! Video of BJP leader Babban Singh Raghuvanshi's obscene act with dancer goes viral

A shocking video has emerged from Ballia district of Uttar Pradesh, in which Bharatiya Janata Party (BJP) leader and chairman of Rasara Sugar Mill, Babban Singh Raghuvanshi was seen engaging in inappropriate behaviour with an orchestra girl in a wedding event. The viral video shows the woman sitting on Babban's lap as he touches her inappropriately and kisses her during a wedding. It is said that this video is about 20 days old. After the video went viral, Babban told media that the viral video was recorded in Bihar during a wedding event. He alleged that Bansdih MLA Ketakee Singh and her husband circulated the video to tarnish his reputation.

Defending himself, he said that he is 70 years old and incapable of such acts, dismissing the video as fake. Raghuvanshi further said that he is a relative of Uttar Pradesh Transport Minister Daya Shankar Singh and has also contested the election from Bansdih assembly seat on a BJP ticket in 1993. He also clarified that he is a contender for the ticket for the upcoming elections and that's' why a conspiracy is being hatched against him. However, social media users are constantly demanding action against the BJP leader. The video has stirred a political storm in the state. Sharing the footage, Samajwadi Party leader Pankaj Rajbhar and Congress leader Surendra Rajput have condemned the BJP leader's behavior. However, Surendra Rajput later deleted the post.

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/8340360961

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

Yoga guru Shivanand Maharaj passes away, UP CM Yogi Adityanath pays tribute

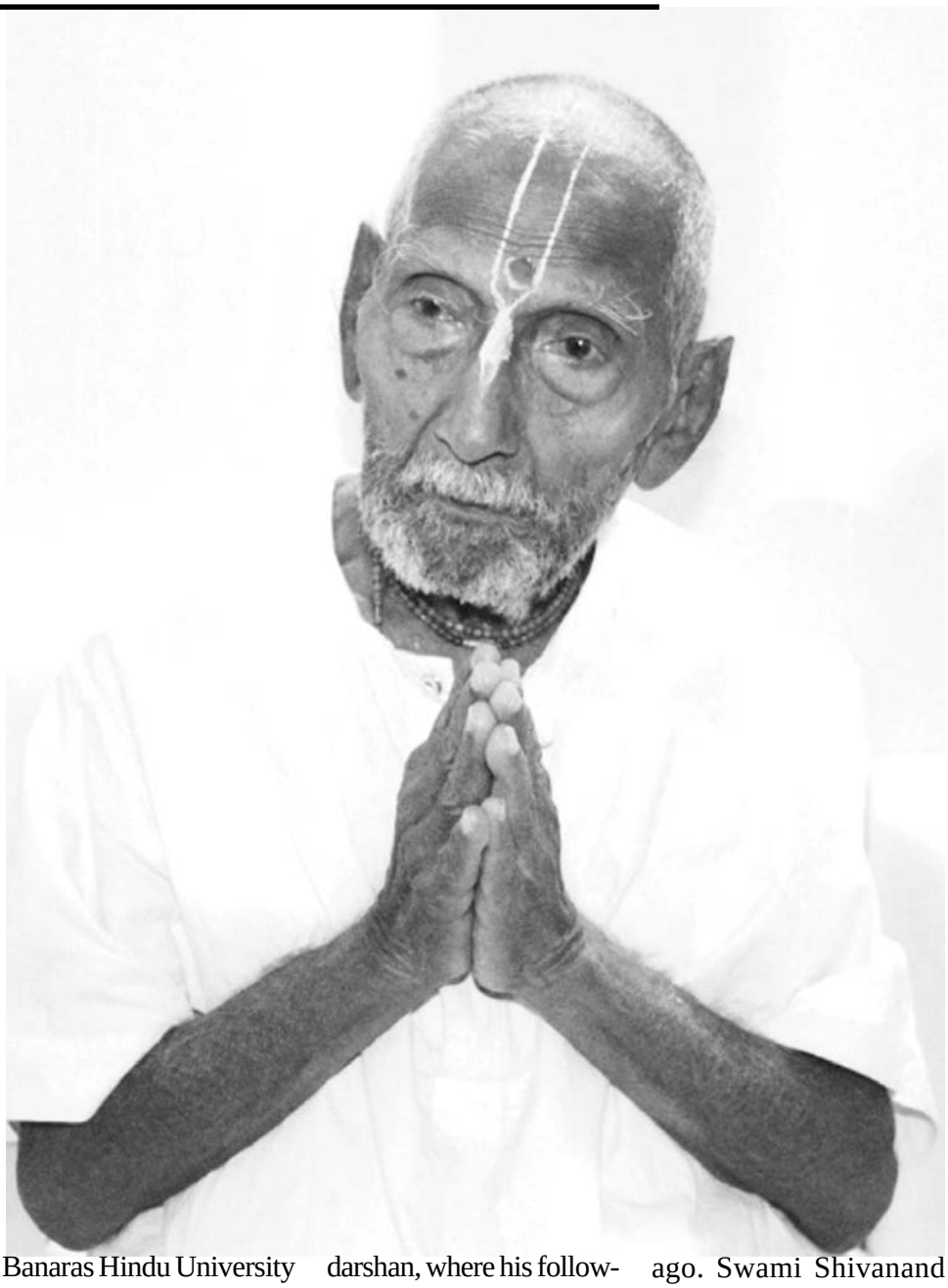

Padam Shri awardee Yoga Guru Swami Shivanand Maharaj died during treatment in a hospital in Varanasi here in Uttar Pradesh. He was around 129 years old. Chief Minister Yogi Adityanath expressed grief over the demise of the veteran yoga guru and paid him an emotional tribute. Taking to X, he wrote, "The demise of Kashi's renowned yoga guru 'Padma Shri' Swami Shivanand ji, who made an unparalleled contribution in the field of yoga, is extremely sad. Humble tribute to him. Your sadhana and yoga-filled life is a great inspiration for the entire society. You dedicated your entire life to the expansion of yoga. I pray to Baba Vishwanath to grant salvation to the departed soul and give strength to his bereaved followers to bear this immense sorrow."

The family members said that Swami Shivanand was admitted to Banaras Hindu University (BHU) hospital due to difficulty in breathing, where he breathed his last at around 8:30 pm on Saturday night. His body has been kept at his ashram in Durgakund for the last darshan, where his followers are thronging. His last rites will be performed at Harishchandra Ghat. The veteran yoga guru was felicitated with Padma Shri by the then President Ram Nath Kovind three years ago. Swami Shivanand Baba had been participating in every Kumbh for the last 100 years. Recently, his camp was set up in Prayagraj Mahakumbh, and he took a bath in Sangam.

दिल्ली पानी....पानी....

आप ने चार इंजन वाली सरकार को बताया फेल

आम आदमी पार्टी (।।च) ने रविवार को राष्ट्रीय राजधानी में जलभराव को लेकर भाजपा के नेतृत्व वाली दिल्ली सरकार की आलोचना की और इसे चार इंजन वाली सरकार की असफलता बताया। पार्टी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर राष्ट्रीय राजधानी के कई जलमग्न स्थानों जैसे धौला कुआं, दिल्ली छावनी और आईटीओ की तस्वीरें साझा कीं। आप ने दिल्ली की बारिश पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि दिल्ली का एक भी इलाका ऐसा नहीं है जहां भाजपा की 'चार खटारा इंजन' वाली सरकार की नाकामी की कहानी कहता जलभराव न हुआ हो। इन आरोपों पर भाजपा की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी ने मिंटो ब्रिज का एक वीडियो साझा किया। उन्होंने सोशल 'एक्स' पर एक पोस्ट में लिखा, 'थोड़ी सी बरसात के बाद मिंटो ब्रिज के नीचे डूबी हुई गाड़ी। यह तो साफ है कि 'चार इंजन' की सरकार फेल हो गई है।' दिल्ली में रातभर हुई बारिश और आंधी ने उमस भरी गर्मी से लोगों को राहत दी, लेकिन परेशानी भी बढ़ाई। विमान परिचालन बाधित हुआ, पेड़ एवं बिजली के खंभे उखड़ गए। मोती बाग, मिंटो रोड, आईटीओ, धौला कुआं, दिल्ली छावनी, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग और चाणक्यपुरी समेत दिल्ली के कई इलाकों में पानी भर गया। मौसम में अचानक आए बदलाव के कारण पारे में भारी

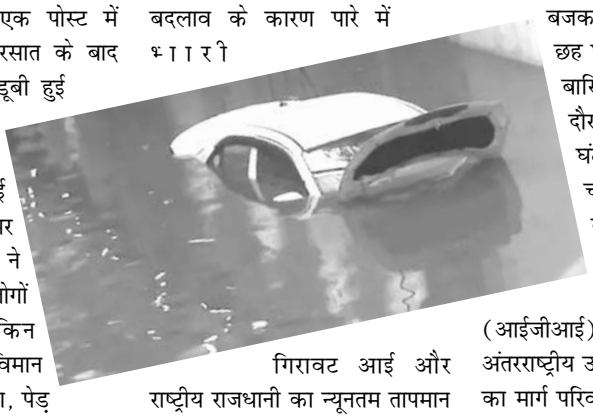

गिरावट आई और राष्ट्रीय राजधानी का न्यूनतम तापमान 19.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो सामान्य से 6.9 डिग्री कम है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने बताया कि दिल्ली के प्रमुख मौसम केंद्र ने देर रात 11 बजकर 30 मिनट से सुबह पांच बजकर 30 मिनट के बीच छह घंटे में 81.2 मिलीमीटर बारिश दर्ज की और इस दौरान 82 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलीं। खराब मौसम के कारण देश के सबसे बड़े इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय (आईजीआई) हवाई अड्डे पर 17 अंतरराष्ट्रीय उड़ानों समेत 49 विमानों का मार्ग परिवर्तित किया गया। हवाई अड्डे के टर्मिनल-तीन पर भी जलभराव की सूचना है।

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/8340360961

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

बंधक बनाकर भाई और दोस्तों से करवाया गैंगरेप

तंत्र-मंत्र से हिंदू लड़कियों का शिकार

● नवीन रांगियाल

इंदौर में शूटिंग एकेडमी की आड़ में लव जिहाद चलाने वाले जिहादी मोहसिन खान के खिलाफ अब पांचवी एफआईआर दर्ज हुई है। इसके साथ ही कई दूसरी महिलाओं ने भी मोहसिन पर आरोप लगाए हैं। पुलिस के मुताबिक लगातार शिकायतें आ रही हैं। ऐसा लगता है कि मोहसिन खान के लव जिहाद (पाप) का घड़ा भर गया है। दरअसल, ड्रीम ओलंपिक शूटिंग एकेडमी के संचालक मोहसिन सलीम खान के खिलाफ पांचवी एफआईआर दर्ज की गई। द्वारकापुरी थाना क्षेत्र की रहने वाली एक युवती की शिकायत पर मोहसिन के खिलाफ दुष्कर्म, सामूहिक दुष्कर्म, अप्राकृतिक कृत्य, जान से मारने की धमकी, मध्यप्रदेश धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम और पॉक्सो एक्ट जैसी धाराओं में केस दर्ज किया गया है। इस मामले में मोहसिन के साथ उसके भाई इमरान और उसके दोस्त फैजान को भी सहआरोपी बनाया गया है। आरोप है कि पीड़िता को 15 दिन तक बंधक बनाकर रखा गया।

☞ **हिंदू लड़कियां लाओ कमिशन पाओ :-** बता दें कि मोहसिन हिंदू लड़कियों को लव जिहाद का शिकार बनाने के लिए सिर्फ उन्हीं को नौकरी देता था। इस बात का खुलासा प्रजापतनगर की रहने वाली पीड़िता ने किया है। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि साल 2020 में एक परिचित महिला के माध्यम से वह मोहसिन की एकेडमी में काम करने लगी थी। लॉकडाउन के दौरान मोहसिन ने उसे जबरन अपने फ्लैट में रोक लिया, बाहर जाने से मना किया और उसका मोबाइल भी छीन लिया। पीड़िता का आरोप है कि इस दौरान उसके भाई इमरान और उसके दोस्त फैजान के साथ तीनों ने कई बार गैंगरेप किया। पीड़िता ने बताया कि मोहसिन सिर्फ हिंदू लड़कियों को नौकरी पर रखता था और उनका शोषण करता था। वह युवतियों से कहता था कि कम उम्र की लड़कियां लाओ, बदले में कमीशन मिलेगा।

☞ **तंत्र मंत्र और मिर्ची निंबू का सहारा :-** पीड़िता ने बताया कि मोहसिन फ्लैट में तंत्र क्रिया करता था, युवतियों पर नींबू-मिर्ची उतारता और उर्दू में कुछ मंत्र बोलता था। वह युवतियों को गलत तरीके से छूता था, हिंसा करता था और उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित करता था। उसने पीड़िता को गर्म प्रेस से जलाया और जान से मारने

की धमकी दी।

☞ **इस्लाम कबूल के लिए प्रेशर :-** तमाम तरह की यातनाओं, दुष्कर्म और गैंगरेप के अलावा शिकायतकर्ता के अनुसार मोहसिन उसे इस्लाम कबूलने के लिए मजबूर करता था और यहां तक कि उसे 5 लाख रुपए में खरीदने की कोशिश भी की। उसने आरोप लगाया कि मोहसिन ने लॉकडाउन के दौरान फ्रिज में मांस रखा था, खरगोश काटा और जबरदस्ती मांस खिलाया। अब पीड़िता की शादी हो चुकी है और उसने पति को पूरी घटना बताकर पुलिस में शिकायत दर्ज करवाई है।

☞ **लगातार आ रही शिकायतें :-** बता दें कि मोहसिन पर पांचवी शिकायत दर्ज की गई है। एमआईजी थाना क्षेत्र की एक और महिला सामने आई है, जिसने मोहसिन पर यौन शोषण और लाखों रुपए की ठगी का आरोप लगाया है। महिला का कहना है कि शूटिंग एकेडमी खुलवाने और रायफल खरीदने के नाम पर मोहसिन ने उससे मोटी रकम ऐंठी। इससे पहले चंडीगढ़ निवासी एक महिला भी मोहसिन पर 2 लाख रुपए की धोखाधड़ी का आरोप लगा चुकी है।

☞ **हिस्ट्री खंगाल रही पुलिस :-** एडिशनल डीसीपी जोन-4 आनंद यादव के मुताबिक कई बिंदुओं पर जांच शुरू कर दी है। मोहसिन खान के खिलाफ बढ़ती शिकायतों को देखते हुए उसके पुराने रिकॉर्ड भी खंगाले जा रहे हैं। मामले की जांच के लिए एसआईटी बनाई गई है जो जल्द ही पूरी रिपोर्ट देगी।

☞ **ज्यादातर वीडियो लडकियों के :-** एडिशनल पुलिस कमिश्नर अमित सिंह ने बताया कि ज्यादातर वीडियो फुटेज पीड़ित लड़कियों के मोबाइल से प्राप्त हुए हैं। पुलिस इस पर भी फोकस कर रही है और मोबाइल की फोरेंसिक लैब से जांच कराई जाएगी। यदि जांच में कोई और व्यक्ति इस मामले में शामिल पाया गया तो उसे भी सह-आरोपी बनाया जाएगा। नकली सर्टिफिकेट बनाने के आरोप पर अमित सिंह ने कहा कि यदि कोई साक्ष्य सहित शिकायत करता है तो संबंधित धाराओं में बढ़ोतरी की जाएगी।

☞ **100 से ज्यादा अश्लील वीडियो :-** आरोपी कोच मोहसिन खान पर निशानेबाजी के बहाने छात्राओं के साथ छेड़छाड़ करने और उनके वीडियो बनाने का आरोप है। हिंदू संगठन ने दावा किया कि आरोपी के मोबाइल में 100 से ज्यादा अश्लील वीडियो मिले हैं, जिनमें से कई वीडियो सामने भी आए हैं। पुलिस ने आरोपी का मोबाइल जब्त कर फोरेंसिक जांच के लिए भेज दिया है। अब तक तीन पीड़िताएं सामने आई हैं। एक नाबालिग छात्रा बुधवार को हिंदू संगठन के सदस्यों के साथ थाने पहुंची और शिकायत दर्ज कराई। उसके बाद गुरुवार को दो और युवतियां थाने पहुंचीं और आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कराया गया। आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

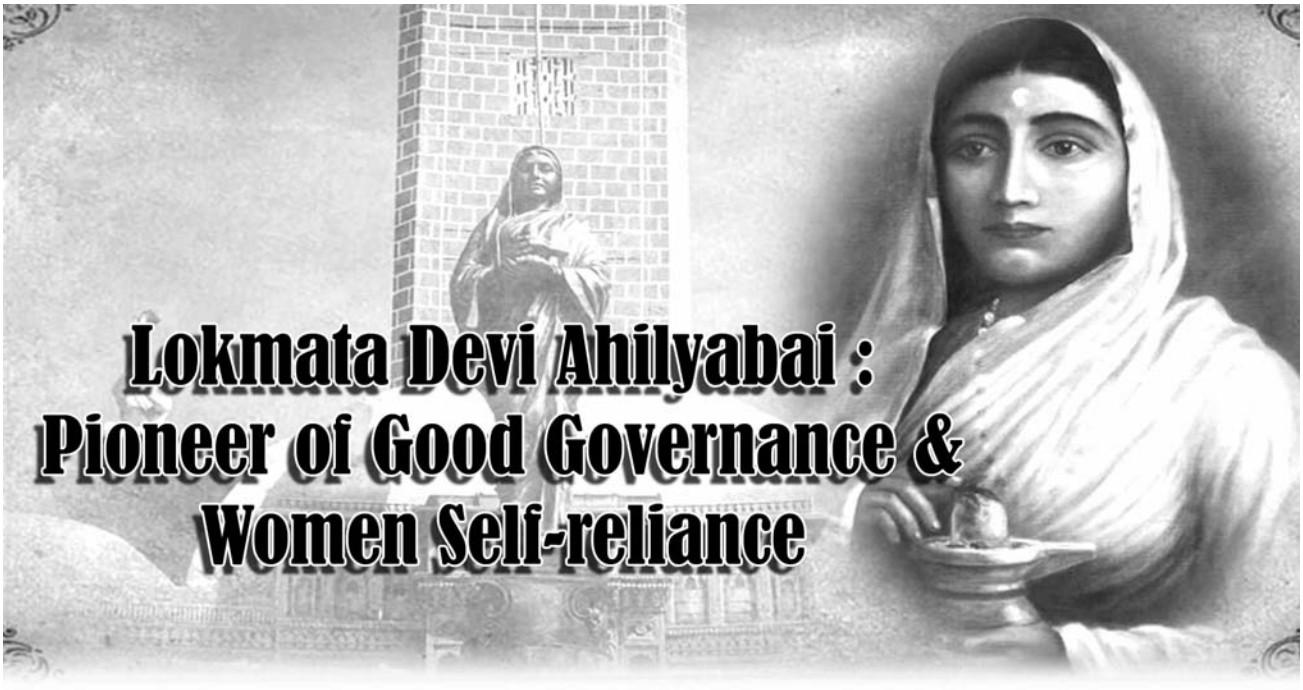

Lokmata Devi Ahilyabai : Pioneer of Good Governance & Women Self-reliance

Dr. Mohan Yadav

Heartfelt salutations on the 300th birth anniversary of the virtuous Lokmata Devi Ahilyabai Holkar….

On this occasion, the Lokmata Devi Ahilyabai Women Empowerment Grand Convention is being organized today in Bhopal. The entire responsibility of this event is being handled by women power (Matri Shakti). Honorable and illustrious Prime Minister Shri Narendra Modi ji is coming to Bhopal to attend this festival of women empowerment and self-reliance. On behalf of the 85 million people of Madhya Pradesh, I extend a heartfelt welcome to the Prime Minister. It is a matter of great fortune for us that the celebration of the virtuous Devi Ahilyabai Holkar's birth anniversary, to be held over the coming year, is being inaugurated today from the soil of Madhya Pradesh. For this, heartfelt thanks to the Honorable Prime Minister.

Devi Ahilyabai Holkar presented an ideal of complete good governance, a self-reliant, self-sufficient and harmonious society, and a safe and prosperous state. From east to west and north to south, she renovated and reconstructed about 130 dilapidated temples. She constructed river ghats, dharmshalas (rest houses), initiated free meal services, and established permanent arrangements for worship and religious rituals. She reinstated the cultural pride of the country and united the nation with a common thread. Her reign was not only a golden era but also a period of cultural renaissance for the nation. Lokmata Devi Ahilyabai carried out unprecedented work for women's self-reliance and empowerment. On one hand, she formed a women's military unit to ensure a tight security system. On the other hand, she took revolutionary decisions for women's social respect and self-dependence. She gave women rights in property, the right of a widow to adopt a son, and the right to remarry, and made rules to prohibit the dowry system. For the wives of soldiers martyred in the army, she established the Maheshwari sari industry in Maheshwar and created a global example of women's prosperity. Her Holkar state became an ideal of good governance, self-rule, orderliness, prosperity, development, and construction. She turned Maheshwar into a center of craft, art, culture, education, literature, industry, and trade, and expanded it across the country. During her reign, the Holkar state became an example of an effective communication system, Panchayati Raj, judiciary, tight security system, and urban as well as rural planning. Throughout her life, she remained dedicated to Lord Shiva and society. The works done by Ahilyabai Holkar for social development and women empowerment are a glorious part of our heritage.

I am pleased to inform that the Madhya Pradesh Government is ceremonially celebrating the tercentenary year of Devi Ahilyabai Holkar. Dedicating this to Lokmata Ahilyabai, a symbol of

valor and bravery, weapon worship programs were organized across the state on the festival of Vijayadashami. Various programs based on her life, achievements, and personality have been conducted in Madhya Pradesh — including workshops, lectures, seminars, plays, mega-dramas, etc. We made efforts to bring Devi Ahilyabai's thoughts, deeds, and ideals to the society through intellectual and cultural activities. Her insights on character building, family harmony, environmental conservation, social and nation-building were presented to the public. Prime Minister Shri Narendra Modi has given the formula of development along with heritage to make India the world's most prosperous and powerful nation. In line with this formula, we have launched a campaign to preserve the glorious heritage of the state and inspire society through the personalities of ideal national heroes while implementing our development plans.

Keeping in mind the holistic development of the state, we have taken a historic initiative called Destination Cabinet. This initiative realizes the vision of Honorable Prime Minister Shri Narendra Modi to promote tourism. With the aim of remembering our glorious heritage along with modern development and moving forward by drawing inspiration from ideal heroes, we held two cabinet meetings in memory of Lokmata Ahilyabai Holkar. The first meeting was held on January 24, 2025, at the fort of Maheshwar, and the second on May 20, 2025, at Rajwada in Indore. In the first meeting, a decision was taken to implement prohibition in 19 sacred sites of the state. This decision will help maintain the sanctity of religious places and strengthen women's social and economic empowerment. In the second meeting, a decision was taken to launch the Lokmata Devi Ahilyabai Holkar Training Programme.

The path set by Ahilyabai Holkar regarding women empowerment has been carried forward by Honorable Prime Minister Shri Narendra Modi ji. In the 300th birth anniversary year of the virtuous Lokmata Ahilyabai Holkar, we have attempted to fulfill the guiding mantra of GYAN (Garib, Yuva, Kisan, Nari — Poor, Youth, Farmer, Woman) given by the Prime Minister. For the holistic development of the fourth pillar 'Nari' (woman), the Devi Ahilyabai Women Empowerment Mission has been launched. Through this mission, the women of the state will become self-reliant, and their economic and social development will gain momentum. The major objectives of the mission include ensuring education, health, nutrition, economic development, and security for women and girls, ensuring access to various government services, and working for the economic self-reliance of women. Key goals of the mission include increasing the girl child sex ratio, in-

creasing girl child education, reducing maternal mortality rate, reducing crimes against women, stopping child marriage, and increasing female participation in the workforce. The Madhya Pradesh government is committed to realizing overall development by following the path shown by Devi Ahilyabai in women empowerment, farmer welfare, social welfare, and good governance. We have taken effective steps in the direction of women leadership and empowerment by incorporating the principles and ideals of Lokmata Devi Ahilyabai into the state's policies and planning. Various efforts are being made at different levels for women empowerment in Madhya Pradesh. Several schemes have been started for women's education, health, security, and economic self-reliance. This has provided women with strong opportunities in employment, self-employment, healthcare, and security. Especially through schemes like Ladli Bahna Yojana, Devi Ahilyabai Holkar Mission, Beti Bachao-Beti Padhao, and Ladli Laxmi Yojana, positive changes have occurred in the lives of women. One Stop Centers have been established in all

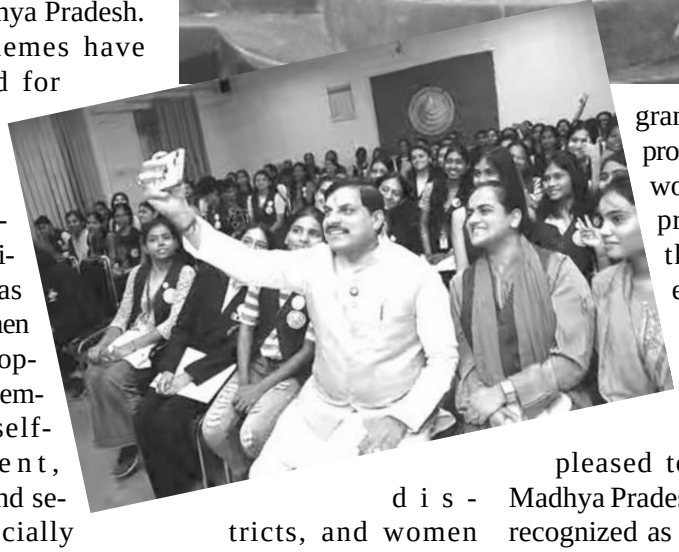

districts, and women and child helplines have been provided for safety. Women Entrepreneur Dedicated Industry Parks have been set up to ensure security, convenience, and respect for women workers. In the MSME Policy 2025, up to 50% capital grant has been provisioned for women entrepreneurs for their self-employment and skill development.

I am pleased to say that Madhya Pradesh has been recognized as a top tourism destination in the world. Through innovation, under the Safe Tourism Destination for Women scheme, 10,000 women have been trained for tourism services. I am satisfied to share that Madhya Pradesh is the first state in the country to increase reservation for women in government services from 33% to 35%. Various campaigns and programs like Lado Abhiyan, Shaurya Dal,Chief Minister Women Empowerment Scheme, and Chief Minister CommunityLeadership Capacity Development Programme are being run in the state. Through the Sanitation and Hygiene Scheme, financial assistance has been provided to 1.9 million girls. More than 1.8 million women — including widows, abandoned women, and mothers with only daughters — are being given social security pensions in the state. From birth to lifelong stages, women are being provided with security, respect, and support through various schemes. The women of the state are becoming self-reliant and independent, and writing a new story of development through innovation.

I have full faith that this prosperity of women will play a vital role in empowering families, society, the state, and the nation. The efforts made by Lokmata Ahilyabai to empower women are now visibly taking shape with continuity and progress on the soil of Madhya Pradesh. Once again, respectful salutations to the virtuous Lokmata Devi Ahilyabai Holkar….

(The writer is Chief Minister of Madhya Pradesh)

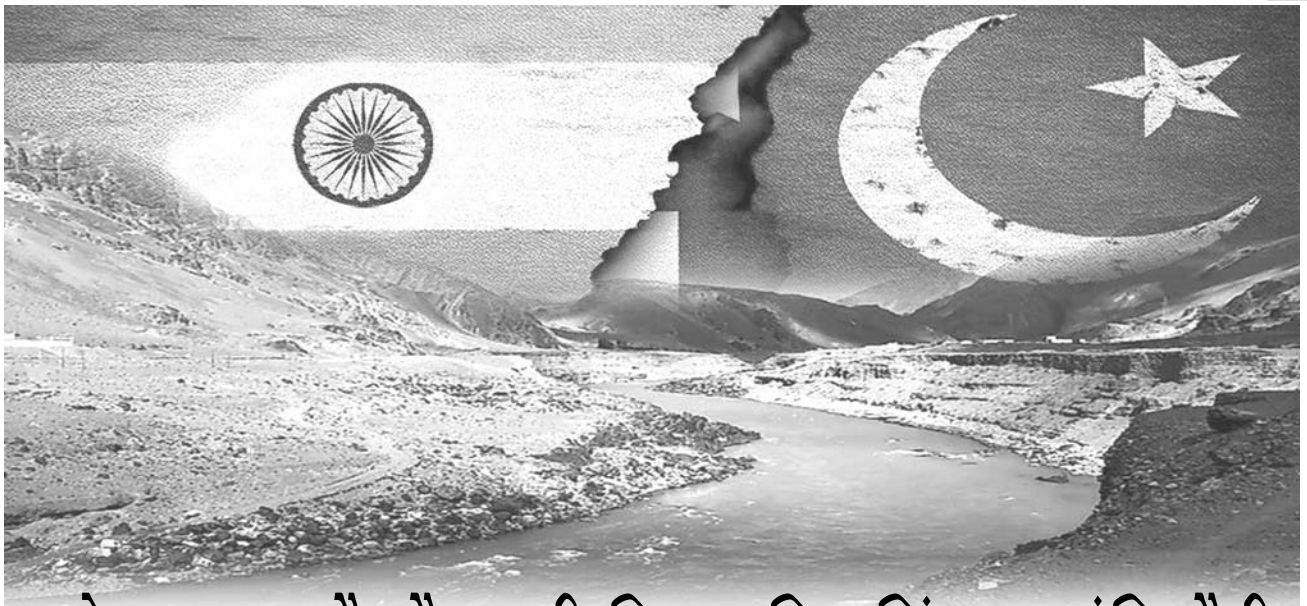

न तो सद्भावना है और न ही मित्रता, फिर सिंधु जल संधि कैसी?

विदेश मंत्रालय ने संसद की एक समिति से कहा है कि सिंधु जल संधि को स्थगित करने का भारत का फैसला पाकिस्तान द्वारा समझौते को दिशा देने वाले दोस्ती और सद्भावना जैसे सिद्धांतों के उल्लंघन का स्वाभाविक नतीजा है। सूत्रों के मुताबिक, मंत्रालय ने समिति से कहा है कि इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी, जलवायु परिवर्तन और ग्लेशियर के पिघलने सहित जमीनी हालात में आए बदलावों के कारण संधि की शर्तों पर फिर से बातचीत करना जरूरी हो गया है। सूत्रों के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय समुदाय को पहलगाम हमले में पाकिस्तान की भूमिका और आतंकवाद के खिलाफ भारत के कड़े रुख से अवगत कराने के लिए 33 देशों की राजधानियों का दौरा कर रहे संसदीय प्रतिनिधिमंडल भी सिंधु जल संधि को स्थगित करने के नई दिल्ली के फैसले को जायज ठहराने के लिए यही तर्क देंगे।

☞ **क्या कहा था मिसरी ने :-** विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने अपनी मीडिया ब्रीफिंग में कहा था कि 1960 की सिंधु जल संधि की प्रस्तावना में स्पष्ट किया गया है कि यह संधि सद्भावना और मित्रता की भावनाश पर आधारित है। उन्होंने कहा था कि पाकिस्तान ने इन सभी सिद्धांतों का प्रभावी रूप से उल्लंघन किया है। मिसरी ने हाल ही में एक संसदीय समिति को पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकवादी हमले के जवाब में भारत की ओर से चलाए गए 'ऑपरेशन सिंदूर' सहित अन्य कार्रवाई के बारे में जानकारी दी थी। उन्होंने पाकिस्तान के साथ सैन्य तनाव के बाद भारत के रुख को समझाने के लिए 33 देशों और यूरोपीय संघ का दौरा कर रहे सात बहुदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंड से भी बात की थी।

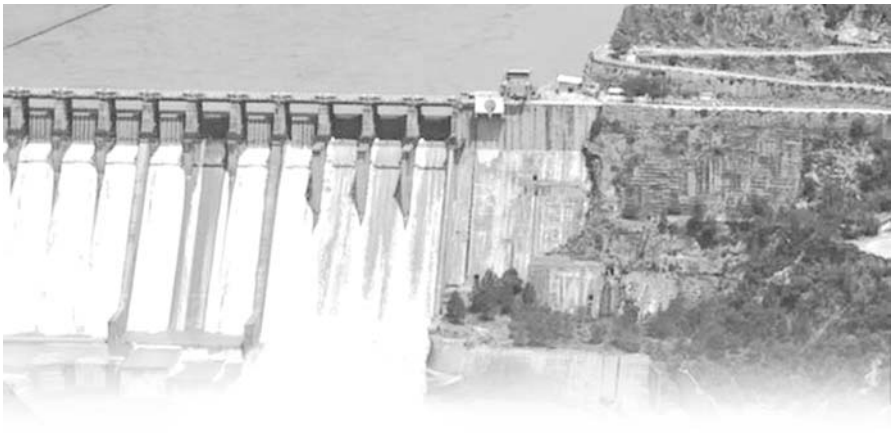

☞ **21वीं सदी के अनुरूप हो संधि :-** सूत्रों के मुताबिक, विदेश मंत्रालय ने समिति से कहा कि पाकिस्तान संधि पर हस्ताक्षर के बाद जमीनी हालात में आए बदलावों के मद्देनजर दोनों देशों की सरकारों के बीच बातचीत के भारत के अनुरोध में लगातार अड़चन डाल रहा है। सूत्रों के अनुसार, मंत्रालय ने कहा कि सिंधु जल संधि पर फिर से बातचीत किए जाने की जरूरत है, ताकि इसे 21वीं सदी के लिए उपयुक्त बनाया जा सके, क्योंकि यह 1950 और 1960 के दशक की इंजीनियरिंग तकनीकों पर आधारित है। मंत्रालय ने कहा कि अन्य प्रमुख बदलावों में जलवायु परिवर्तन, ग्लेशियर का पिघलना, नदियों के पानी की मात्रा में आया बदलाव और जनसांख्यिकी शामिल हैं। उसने कहा कि इन कारकों के अलावा स्वच्छ ऊर्जा की चाह संधि के तहत अधिकारों और दायित्वों के निर्धारण पर नये सिरे से बातचीत को अनिवार्य बनाते हैं। मंत्रालय ने कहा कि संधि की प्रस्तावना में कहा गया है कि यह सद्भावना और दोस्ती की भावना पर आधारित है। पाकिस्तान ने इन सभी सिद्धांतों का प्रभावी रूप से उल्लंघन किया है। पाकिस्तान की ओर से सीमापार से लगातार जारी आतंकवाद हमें संधि पर उसके प्रावधानों के अनुसार अमल करने से रोकता है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि जब जमीनी हालात पूरी तरह से बदल गए हों, तो संधि को स्थगित रखने का फैसला स्वाभाविक और भारत के अधिकार क्षेत्र में है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सिंधु जल संधि को स्थगित करने के फैसले का समर्थन करते हुए हाल ही में कहा था कि खून और पानी एक साथ नहीं बह सकते।

"Bholenath is waiting for you": Farooq Abdullah urges tourists to return

Former Jammu and Kashmir Chief Minister and National Conference president Farooq Abdullah on Tuesday appealed to tourists to return to Kashmir saying security atmosphere has improved in the Valley since the last month terror attack in Pahalgam. Speaking to media during his visit to Pahalgam, Abdullah said the Kashmir is peaceful now and the normalcy was being restored. "Thankfully, the fear is receding now. The tourist places (that were shut after the attack) are being thrown open. .. The situation has improved," he said. Earlier in the day, Abdullah was seen playing golf at the picturesque Pahalgam Golf Course. Abdullah was in Pahalgam on a day when J&K Chief Minister Omar Abdullah chaired a special cabinet meeting in Pahalgam to boost the morale of tourists.

Tourist arrivals have seen a significant dip since the April 22 terror attack in Baisaran Valley near Pahalgam, which left 25 tourists and a local dead. Farooq Abdullah expressed optimism about the recent visit of tourism-related delegations to Kashmir, saying it will significantly contribute to the revival of the region's tourism industry. "I believe it will have a strong impact. These delegations are witnessing things firsthand — how peaceful it is here. Just look around. The weather is far better than in many other parts of the country. While temperatures there are soaring to 50 degrees, here it's a pleasant 20 to 25 degrees. The air is fresh, there's no pollution. I say, come and see for yourself," Abdullah said. He said the visitors should not be scared from travelling to Kashmir.

"I say, those who live in fear are already dead. Don't be afraid — come and see for yourself. Bholenath is waiting for you," he said when asked about the preparations for Amarnath Yatra beginning July 3.

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/8340360961

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

मानहानि मामले में राहुल गांधी को झटका

पुणे की एक अदालत ने विनायक दामोदर सावरकर के पोते सत्यकी सावरकर की मातृवंश की जानकारी मांगने वाली राहुल गांधी की अर्जी खारिज कर दी। कांग्रेस नेता द्वारा सावरकर पर की गई आपत्तिजनक टिप्पणी के मामले में सत्यकी ने मानहानि की शिकायत दर्ज कराई है और राहुल ने अदालत में अर्जी देकर उनकी मां के परिवार की जानकारी मुहैया कराने का अनुरोध किया था। न्यायिक मजिस्ट्रेट (प्रथम श्रेणी) अमोल शिंदे ने आवेदन को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि यह मामला लंदन में राहुल गांधी द्वारा दिए गए अपमानजनक भाषण से संबंधित है, न कि सत्यकी सावरकर की मां दिवंगत हिमानी अशोक सावरकर के मायके से। हिमानी सावरकर महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे के छोटे भाई गोपाल विनायक गोडसे की बेटी थीं। राहुल गांधी ने अपने वकील मिलिंद पवार के जरिए दलील दी थी कि शिकायतकर्ता ने

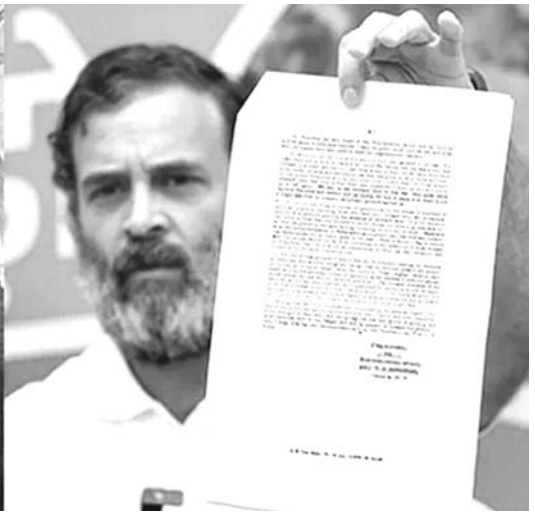

शिकायत दर्ज करते समय अपने पिता के परिवार का विवरण तो दिया था, लेकिन अपनी मां के मायके की जानकारी नहीं दी है। बचाव पक्ष ने दलील दी कि यह जानकारी सुनवाई के लिए महत्वपूर्ण थी। अदालत ने अपने आदेश में कहा, यह मामला दिवंगत हिमानी अशोक सावरकर के वंश से संबंधित या विवाद को लेकर नहीं है। इसलिए इस अदालत को आरोपी के आवेदन में कोई गुण नहीं दिखती। मामले को आगे जांच के लिए भेजने की भी कोई जरूरत नहीं है। इस बीच, अदालत ने गांधी की जमानत रद्द करने का अनुरोध करने वाली सत्यकी सावरकर की याचिका को भी खारिज करते हुए कहा कि दिए गए आधार ऐसी कार्रवाई के लिए पर्याप्त नहीं हैं। सावरकर ने अपनी याचिका में आरोप लगाया कि मामले में आरोपी को जवाब देने के लिए 10 जनवरी, 2025 की तारीख तय की गई थी, लेकिन आरोपी किसी न किसी बहाने से अपना जवाब दाखिल नहीं कर रहा है और देरी करने की रणनीति अपना रहा है। न्यायाधीश ने कहा कि गांधी को व्यक्तिगत उपस्थिति से स्थाई छूट के साथ जमानत दी गई है और ऐसा कोई सबूत नहीं है जिससे पता चले कि वह जानबूझकर कार्यवाही में देरी कर रहे हैं। आदेश में कहा गया, ऐसा नहीं पाया गया कि आरोपी मामले को लंबा खींच रहा है। आवेदन में उल्लिखित आधार आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के लिए उचित नहीं हैं। इसलिए आवेदन खारिज किए जाने योग्य है। सत्यकी सावरकर ने मार्च 2023 में लंदन में दिए गए गांधी के भाषण को लेकर उनके खिलाफ मानहानि की शिकायत दर्ज कराई है। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने उक्त भाषण में दावा किया था कि वीडी सावरकर ने एक किताब में लिखा था कि उन्होंने और उनके दोस्तों के एक समूह ने एक बार एक मुस्लिम व्यक्ति की पिटाई की थी और सावरकर को इस बात से खुशी हुई थी। शिकायतकर्ता ने दलील दी कि सावरकर ने कभी ऐसा दावा नहीं किया और गांधी की टिप्पणी को काल्पनिक, झूठा और दुर्भावनापूर्ण करार दिया।

Crew of AX-4 to be piloted by Indian astronaut Subhanshu Shukla on quarantine ahead of June 8 ISS mission

All the crew members of the Axion-4 Mission to be piloted by Indian Astronaut Subhanshu Shukla for the ISS has gone on quarantine ahead of the June 8 mission.

The quarantine period began on Sunday/ Monday for conducting regular health checkups ahead of the launch. According to reports, the mission to the International Space Station, SpaceX Falcon 9 rocket will launch the Axiom-4 mission crew aboard a Dragon spacecraft to the ISS from the Kennedy Space Center in the US on June 8, which was confimred by NASA and Axiom Space. The critical phase of quarantine ensures the four astronauts remain in optimal health, free from any infections that could had any impact on the prestigious mission as Mr Shukla, will be the second astronaut from India to go to space after Rakesh Sharma in 1984.

According to NASA, Quarantine protocols are a vital part of prelaunch preparations to minimise any health risk factor. The all crew will remainisolated till the luanch date and would be undergoing regular health checkups and final trainign exercises. Axiom Space posted on X "The first day of quarantine is complete! The #Ax4 team has landed in Florida."

"They are now entering a two-week quarantine phase to stay healthy as they gear up for their launch to the @Space_Station". Earlier in a post before going on quarantine, Axiom Space said "The #Ax4 crew is on their way to quarantine. Before they go, Axiom Space employees came together to celebrate. Crew Send-off is a tradition that pays tribute to the dedication and tireless efforts of staff prior to the crew embarking on their mission. From #TeamAxiom, Godspeed #Ax4!".

प्रधानमंत्री को 60 लाख रुपए चाहिए
1971 का एक सनसनीखेज घोटाला, जिसने देश को हिला दिया था

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, 11 संसद मार्ग, नई दिल्ली। साल 1971, मई की 24 तारीख और सोमवार का दिन। आज से ठीक 54 साल पहले इसी बैंक में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की आवाज की नकल करते हुए एक ऐसे बैंक घोटाले को अंजाम दिया गया, जिसने देश को हिलाकर रख दिया था। यह कांड बैंकिंग जालसाजी के इतिहास में 'नागरवाला कांड' के नाम से कुख्यात है और आज भी संसदीय गलियारे में कभी-कभार इसकी गूंज सुनाई पड़ती रहती है।

हाल ही में प्रकाशित किताब 'दी स्कैम दैट शुक दी नेशन' में 24 मई की उस घटना का पूरे विस्तार से वर्णन किया गया है। 24 मई बैंक के हेड कैशियर वेद प्रकाश मल्होत्रा आराम से अपनी कुर्सी पर बैठे थे, अचानक से फोन की घंटी बजी। मल्होत्रा ने जैसे ही फोन उठाया, दूसरी ओर से सुनाई पड़ी आवाज ने उनके दिल की धड़कनें अचानक बढ़ा दीं।

☞ **मल्होत्रा की जिंदगी में आया भूचाल :-** उन्हें बैंक की नौकरी करते हुए 26 साल हो चुके थे, लेकिन पहले कभी इस तरह का कोई फोन नहीं आया था और उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि यह फोन कॉल उनकी जिंदगी में भूचाल ला देगा। समय हुआ था 11 बजकर 45 मिनट मल्होत्रा ने हैलो बोला और उधर से आवाज आई, 'भारत की प्रधानमंत्री के सचिव श्री हक्सर आपसे बात करना चाहते हैं।' मल्होत्रा ने कहा- 'बात करवाइए'। इसके बाद खुद को हक्सर बताने वाला आदमी लाइन पर आया और उसने मल्होत्रा से कहा कि भारत की प्रधानमंत्री को 60 लाख रुपए चाहिए जो किसी गोपनीय काम के लिए भेजे जाने हैं। वह अपना आदमी आपके पास भेजेंगी और आप उन्हें वो रकम दे सकते हैं। हेड कैशियर मल्होत्रा ने हक्सर से सवाल किया कि यह रकम क्या किसी चेक या रसीद के बदले में दी जाएगी। इस पर उन्हें बताया गया कि यह बेहद जरूरी और गोपनीय काम है। प्रधानमंत्री का ऐसा ही आदेश है। रसीद या चेक बाद में दे दिया जाएगा।

☞ **मैं इंदिरा गांधी बोल रही हूं :-** इसके बाद तथाकथित हक्सर ने मल्होत्रा को समझाया कि रकम कहां और कैसे लेकर जानी है। लेकिन मल्होत्रा को पहले कभी ऐसी स्थिति का सामना नहीं करना पड़ा था। उन्होंने हकलाते हुए कहा कि ये बहुत मुश्किल काम है। इस पर हक्सर ने कहा कि तो आप भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी से बात करें। एक ही क्षण बाद मल्होत्रा को फोन पर जानी-पहचानी आवाज सुनाई पड़ी, 'मैं भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी बोल रही हूं।' मल्होत्रा को अपने कानों पर यकीन न हुआ कि वह इंदिरा गांधी से बात कर रहे हैं। उन्होंने बाद में अपनी गवाही में भी कहा था कि इंदिरा गांधी की आवाज सुनते ही उन पर 'जादू सा' हो गया था। दूसरी तरफ से आ रही आवाज ने सीधे मुद्दे की बात की, 'मेरे सेक्रेटरी ने जैसा आपको बताया है, बांग्लादेश में एक बहुत ही महत्वपूर्ण और गोपनीय काम के लिए तुरंत 60 लाख रुपए की जरूरत है। तुरंत इसका इंतजाम करवाएं। मैं अपने आदमी को भेज रही हूं। हक्सर ने जो जगह बताई है, आप वहां पर रकम उसके हवाले कर दें।

☞ **कौन था सोहराब नागरवाला :-** मल्होत्रा को अब पूरा यकीन हो गया था कि फोन पर दूसरी तरफ भारत की प्रधानमंत्री ही थीं। पत्रकार प्रकाश पात्रा और राशिद किदवई द्वारा लिखी गई पुस्तक 'दी स्कैम दैट शुक दी नेशन' में इस नागरवाला कांड की विस्तार से पड़ताल की गई है। किताब की कहानी इस कांड के सरगना रुस्तम सोहराब नागरवाला के इर्द-गिर्द घूमती है, जो भारतीय सेना का एक सेवानिवृत्त कैप्टन था और जिसने 1971 में इस कांड को अंजाम दिया था। घटना के कुछ ही घंटों के भीतर नागरवाला को हवाई अड्डे से गिरफ्तार करने के साथ ही लूट की अधिकतर रकम बरामद कर ली गई थी। किताब के पहले अध्याय 'लूट' में हेड कैशियर मल्होत्रा के शब्दों में उस दिन की घटना का रोचक ढंग से ब्योरा दिया गया है। मल्होत्रा कहते हैं कि जब उन्हें यकीन हो गया कि ये प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ही थीं तो उन्हें थोड़ी राहत मिली। लेकिन उन्होंने कहा, 'मैं उस आदमी को पहचानूंगा कैसे?'

☞ **क्या था कोड वर्ड :-** इस सवाल पर दूसरी तरफ से उन्हें बताया गया कि वो आदमी आपसे कोड वर्ड में बात करेगा और कहेगा, 'मैं बांग्लादेश का बाबू हूं' और आप जवाब देंगे, 'मैं बार एट लॉ हूं।' इससे पहले हक्सर ने मल्होत्रा को समझाया था, 'इस रकम को फ्री चर्च के पास लेकर जाना, क्योंकि इसे वायुसेना के विमान से बांग्लादेश भेजा जाना है। ये काम तुरंत करना है और बहुत ही जरूरी है। तुम किसी से इसका जिक्र नहीं करोगे और जल्दी आओगे। पहले अध्याय में इसके साथ ही बताया गया है कि किस प्रकार मल्होत्रा ने बैंक के अपने दो जूनियर कैशियर के साथ मिलकर बैंक के स्ट्रांग रूम से इस रकम को निकाला और बैंक की एम्बेसेडर कार में उसे ट्रंकों में रखकर बताई गई जगह पर पहुंचे। पुलिस को दर्ज कराए गए अपने बयान में बाद में मल्होत्रा ने कहा था, 'एक लंबी चौड़ी कद-काठी का गोरी रंगत वाला आदमी, जिसने हल्के हरे रंग का हैट पहना हुआ था, मेरी तरफ आया और कोड वर्ड बोला और उसके बाद कहा, चलो चलते हैं।' मल्होत्रा के बयान के अनुसार, पंचशील मार्ग के चौराहे पर पहुंचकर उस आदमी ने कहा कि उसे वायुसेना का विमान पकड़ना है और यहां से आगे वह टैक्सी में जाएगा। उसने मल्होत्रा से कहा, 'आप सीधे प्रधानमंत्री आवास पर जाएं। वह आपसे एक बजे मिलेंगी।'

☞ **हवाई अड्डे से पकड़ा गया नागरवाला :-** मल्होत्रा ने किराये पर ली गई टैक्सी का नंबर नोट किया डीएलटी 1622 और एम्बेसेडर में बैठकर प्रधानमंत्री आवास की ओर चल दिए। अब उन्हें प्रधानमंत्री से रसीद लेनी थी। इस किताब में नागरवाला कांड पर अलग-अलग कोणों से रौशनी डाली गई है। जालसाजी का पता चलते ही चाणक्यपुरी थाने में शिकायत दर्ज कराई गई और एसएचओ हरिदेव ने तुरंत हरकत में आते हुए नागरवाला को दिल्ली हवाई अड्डे से पकड़ लिया। बाद में, नागरवाला को चार साल की सजा हुई, लेकिन तिहाड़ जेल में अचानक दिल का दौरा पड़ने से उसकी मौत हो गई। कुछ समय बाद जांच अधिकारी डीके कश्यप की भी मौत हो गई थी। किताब हार्पर कॉलिंस ने प्रकाशित की है।

Best Sports Events Around the World to Plan Your Trip for!

Sports fans are a fun bunch. They're prepared to travel the world for their favourite team or a player. This is nothing new, as the passion of these people is through the roof. While a hardcore fan is prepared to go far and beyond for his team or favourite player, even us casuals could do the same, but for certain sports events. Certain events are bigger than life, have unique and interesting locations, and can offer an opportunity to do a bit of tourism in addition to enjoying sports. So, if you're in the mood to enjoy top sports competition and do a bit of travelling while you're at it, here are the top sports events to plan your trip around.

The Olympics

Of course we're going to start with the Olympics. The mother of all sports events. Every true sports fan should visit the Olympics at least once in life if opportunity arises. It is an event that is on schedule every four years which leaves plenty of time for planning your trip. The Olympics are always tied to a major city, so travelling is a must in terms of sightseeing and experiencing a new culture and a different society. Last time around the Olympics were held in Paris, France. A fabulous city to experience. The next time when the Olympics come around they will be held in Los Angeles, USA. Experiencing Malibu, Beverly Hills, and Hollywood is a great side quest in addition to the Olympics. Before that they were in Tokyo, London, Beijing, and Rio de Janeiro. All of these cities, and countries such as Brazil, Japan, England, and China are more than worth exploring. Doing it during an Olympic year will certainly add a few different flavours to your trip.

Super Bowl

The NFL is utterly an American sport, but its popularity stems far beyond the borders of the USA. It is a crucial part of American culture, and when the last game of the season is on schedule the country almost stops for a few days. The Super Bowl week is a series of festivities across the USA, but mostly in the city where the culmination of every NFL season is held. This year in February, the Super Bowl was held at New Orleans, Louisiana, and it was a one sided encounter between the Eagles and Chiefs. In addition to the SB, exploring New Orleans as one of the top cities for nightlife, wining and dining in the USA is an experience you owe to yourself at least once during your lifetime. An even better Super Bowl location was chosen for the 2024 SB and it was no other city than Las Vegas. The gambling Mecca offers plenty of things to do for a casual visitor, and while sports fans were mostly focused on using outlets such as

Stake and betting on the game itself, plenty decided to spend the nights leading to the SuperBowl in one of the numerous casinos. The next year game will be held at Levi's stadium in San Francisco, and for a casual NFL fan with tickets for the big game, visiting the Golden Gate Bridge, the Alcatraz Island, Pier 39, Golden Gate Park, and other sightseeing locations in SF is a great way to spend your vacation on the West Coast.

World Cup

World Cup is a renowned soccer competition held every four years where top national teams compete for a trophy popularly called the Golden Goddess, and a chance to become world champions in soccer. Each four years a different location is selected, making the tourism part of the World Cup rather appealing. If you love the sport, it is amazing, but if it happens that the competition is held in a country you want to visit it is a double win. Last time, the competition was held in Qatar, making the golf country the first one in the region to hold this honour. The best part is that competition doesn't only change countries but also continents. This time around it was in the Middle East. In 2026 the WC will be held between Mexico, Canada, and the USA in numerous cities making it ideal for tourists who want to travel. When the World Cup is on, soccer can be in the shadow of tourism as one could have an opportunity to be at games in Montreal, New York, and Mexico City when the USA, Mexico, and Canada are hosts.

Monaco Grand Prix

The Monaco Grand Prix is one of the most unique races on the F1 calendar. It is a race that is engraved deep in the history of the F1 caravan, considering that it's been on schedule since 1929. Together with the Indianapolis 500, and the 24 Hours of Le Mans, it constitutes the Triple Crown of Motorsport. Another factor making it unique is that it is the only race shorter than the FIAs mandated circuit length of 190 miles. The race is an annual event in the world of Formula 1 and the city stops during its organization as it is held at the streets of Monaco. As far as racing goes, it is a race that brims with glamour and prestige and it all comes down to its one of a kind location. While the race itself is a speedy event, and with all preparations, qualifications, and training for the drivers, it ends in a few days. Luckily, if you're in the city for the race, it offers plenty of more things to do in addition to watching the race and enjoy some F1 betting. Talking about betting the city is an European capital of gambling and it is a home to some of the most prestigious European casinos. A home to plenty of millionaires, Monte Carlo provides visitors with a chance to meet a celebrity or two. In addition to a perfect climate, unique architecture, and a cultural presence not felt anywhere else in Europe, Monte Carlo is the home to one of the most unique F1 races you can get to see in your lifetime. It is still not too late to book your tickets for this year's Monaco Grand Prix as it is on schedule on 25th May.

Wimbledon

Tennis has a congested calendar throughout the year. In addition to four Grand Slams there's plenty of Masters and other even minor tournaments to keep the fans of the sport entertained. While we do not want to single out one event, we simply have to. Fair play to all the other Slams, but Wimbledon is a one of a kind event in more ways than one. The green English grass gives it an aura of prestige, and seeing all the players wearing exclusively white, it brims with an Royal aura so typical of the Brits. It is often visited by members of the Royal family, sports celebrities such as David Beckham, Hollywood actors such as Brad Pitt, and many other celebrities from different spheres of life. There are worse ways to spend your summer compared to being at Wimbledon, eating Kent strawberries, and enjoying London. The tennis experience at Wimbledon can't be compared to anything else, but the England capital adds to the whole experience and this sports event is definitely worth planning your vacation around a single sports event.

Kentucky Derby

In the world of horse racing, the Kentucky Derby just might be the top race out there. Of course, plenty of this appeal comes from the fact that Americans know how to advertise their appeal, but we're going to be fair. While we're suggesting the Kentucky Derby, you will not be in the wrong by planning your vacation around the Melbourne Cup, dubbed as the race that stops the nation, or the Epsom Derby. Yet, we singled out the race at Churchill Downs, Louisville, Kentucky. The history of horse racing runs deep in the states, and the Kentucky Derby is its pin-

nacle on the US soil. Even if you're not a fan of racing itself it is a glamorous festivity that lasts quite a few days, and it is a chance for fashion trends to start, for some casual betting to occur, and for celebrities to mingle among the crowd in an event that has horses in its centre. Louisville is a great place to explore on foot, try the local dishes, and explore the south-eastern US culture. It is good to know, before visiting, that the festivities surrounding the Kentucky Derby start two weeks prior to the race which is usually on the schedule during the first week of May. Trust us when we say it, visiting Louisville during the Kentucky Derby and at any other time is not the same.

UEFA Champions League Final

The Champions League final is the culmination of the long CL season where the two best teams of that year battle for the crown. The trophy is the most prestigious in the world of football in addition to the World Cup. This year's edition will feature PSG and Inter while the final venue is Munich, Germany. For plenty of folks visiting Munich is best during the Oktoberfest, but a CL Final might just be an ideal opportunity to watch two top tier teams battling it out for the trophy while enjoying some Bavarian beers, foods, and culture. Each year, the Final has a different venue. Last year, it was Wembley, London. Before that it was Stade de France, Paris, Ataturk Olympic Stadium in Istanbul and so on. It is a great opportunity every year to visit a new country, watch some great football, meet football fans, while enjoying a city in its own right without the football connection.

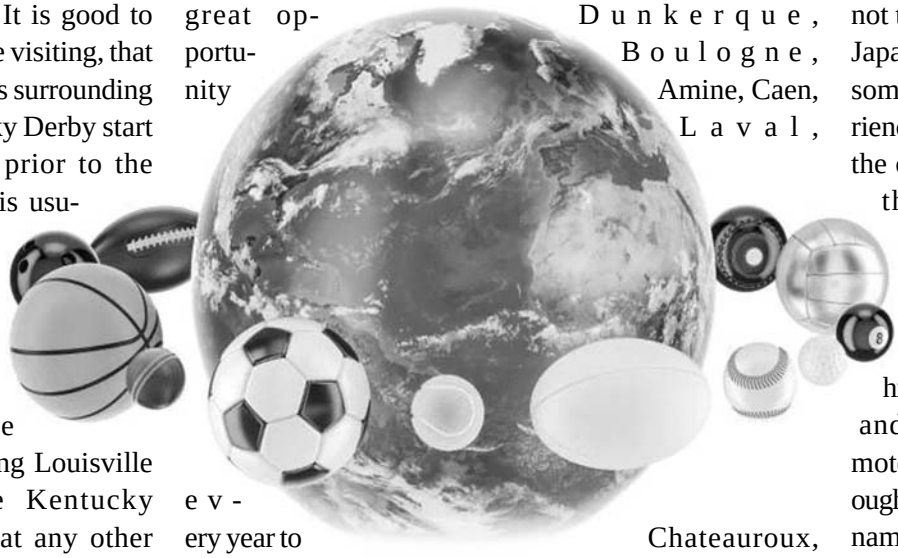

Tour de France

We probably should have pinned this one near the top. As far as cycling races go, the Tour de France is the biggest one there is. It is a prestigious sports event. What adds to its prestige is the fact that it is held through some of the most beautiful scenery you will see in your lifetime. France during the summer is the most beautiful place in the world. The best part about the Tour de France is that it is a three week event with 21 stages. You can be there for any stage, and get your fair share of cycling and France alike. This year's race starts on July 5th in Lille. It runs through some of the more memorable locations in France including Dunkerque, Boulogne, Amine, Caen, Laval, Chateauroux, Toulouse, Montpellier, Valence, and it of course wraps up in Paris. Depending on your plans for the France vacation tied to the Tour de France, you can visit the north end of the country, east, south, and central France alike. As far as sports and tourism go, we might argue that the Tour de France has the most to offer. From some of the most scenic nature in Europe, to the top architecture of some of its smaller and bigger cities, and an unparalleled taste in wines, cheese, and cuisine in general.

Tokyo Grand Sumo Tournament

Let's wrap it up with quite a peculiar sports competition. The Tokyo Grand Sumo Tournament is an annual event held each November in Tokyo. Unlike many of the sports events we listed above, this one is tied solely to Japanese culture, and sumo is not too popular outside of Japan. So if you're in for some unique sports experience, while experiencing the culture and society of the far east, Tokyo Grand Sumo Tournament just might be your cup of tea. The event itself features high end sumo wrestling, and if you're even remotely into this sport you ought to know that this tournament is the pinnacle of this sport. Considering that Tokyo is the only venue, it provides an ideal chance to explore the city which is one of the biggest in the world offering plenty of unique content.

So, sports fans of the world with a pinch of love for travel added, these are your sports events you ought to plan your next trip around. Some are annual, some are held every four years. Either way it leaves you plenty of time for planning.

कौन हैं भारतीय नौसेना की दो बहादुर महिला अधिकारी, जिन्होंने 8 महीनों में तय किया 50,000 किलोमीटर का समुद्री सफर

हालही में भारतीय नौसेना की दो जांबाज महिला अधिकारियों, लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा ए. और लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना के., ने इतिहास रचते हुए 'नाविका सागर परिक्रमा-II' को सफलतापूर्वक पूरा किया। वे गोवा स्थित अपने नौसेना बेस पर प्छैट तारिणी पर सवार होकर लौट आई हैं। यह एक ऐसा कारनामा है जिसने पूरे देश को गर्व से भर दिया है और प्रधानमंत्री सहित कई दिग्गजों ने उनकी जमकर सराहना की है।

☞ **नाविका सागर परिक्रमा-II क्या है?** :- नाविका सागर परिक्रमा-II भारतीय नौसेना का एक महत्वाकांक्षी अभियान है, जिसके तहत महिला अधिकारियों द्वारा पूरे विश्व की समुद्री परिक्रमा की जाती है। यह इस अभियान का दूसरा संस्करण है। पहले संस्करण में छह महिला अधिकारियों ने हिस्सा लिया था, लेकिन इस बार का अभियान इसलिए भी खास है क्योंकि लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा ए. और लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना के. ने केवल दो सदस्यों के चालक दल के साथ यह साहसिक यात्रा पूरी की है। यह ऐतिहासिक अभियान 2 अक्टूबर 2024 को गोवा से शुरू हुआ था। आठ महीने की इस यात्रा में दोनों महिला अधिकारियों ने लगभग 50,000 किलोमीटर (लगभग 25,400 नॉटिकल मील) की दूरी तय करते हुए दुनिया का चक्कर लगाया। यह सफर उन्होंने भारतीय नौसेना की सेलिंग बोट INSV तारिणी पर बिना किसी इंजन या बाहरी तकनीकी सहायता के, केवल पाल (sail) और हवा के सहारे पूरा किया। इस दौरान उन्हें तीन महासागरों और चार महाद्वीपों से होकर गुजरना पड़ा, जिसमें केप ऑफ गुड होप, केप लीविन और केप हॉर्न जैसे चुनौतीपूर्ण समुद्री केप भी शामिल थे।

☞ **साहस और आत्मनिर्भरता की मिसाल** :- यह यात्रा सिर्फ समुद्री दूरी तय करने से कहीं बढ़कर है। यह भारतीय महिलाओं के साहस, दृढ़ संकल्प और अदम्य भावना का प्रतीक है। लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा ए. और लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना के. ने साबित कर दिया कि भारतीय महिलाएं किसी भी चुनौती का सामना करने में सक्षम हैं, चाहे वह समंदर की विशाल लहरें ही क्यों न हों। इस अभियान ने महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक नई मिसाल कायम की है और देश की 'नारी शक्ति' का परचम पूरी दुनिया में लहराया है। INSV तारिणी, जिस पर उन्होंने यह यात्रा की, एक स्वदेशी रूप से निर्मित 56 फुट लंबा नौकायन पोत है। यह 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' पहल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो दर्शाता है कि भारत न केवल अपने दम पर ऐसे अभियानों को अंजाम देने में सक्षम है, बल्कि इसके लिए आवश्यक उपकरण भी बना सकता है।

☞ **प्रधानमंत्री ने की सराहना** :- इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर देश के प्रधानमंत्री ने इन बहादुर महिला अधिकारियों की जमकर सराहना की है। प्रधानमंत्री ने ये बात भोपाल में अहिल्या बाई होलकर की 300वीं जयंती के मौके पर कही जहां उन्होंने इंदौर मेट्रो को भी हरी झंडी दिखाई। लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा ए. और लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना के. की वापसी पर गोवा के मर्मुगाओ पोर्ट पर एक भव्य समारोह आयोजित किया गया, जहां केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने उनका स्वागत किया और उन्हें सम्मानित किया। रक्षा मंत्री ने कहा कि यह परिक्रमा भारत की बेटियों की इच्छाशक्ति और साहस का प्रमाण है। उन्होंने यह भी कहा कि इन महिला अधिकारियों ने यह सिद्ध किया है कि भारतीय महिलाएं समंदर की विशालता से भी बड़ी हैं। 'नाविका सागर परिक्रमा-II' सिर्फ भारतीय नौसेना के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए एक गर्व का क्षण है। यह युवा पीढ़ी को प्रेरित करेगा कि वे अपने सपनों का पीछा करें और किसी भी बाधा से न डरें। यह मिशन भारत की समुद्री शक्ति, महिला सशक्तिकरण और नवाचार का एक बेजोड़ उदाहरण है।

कानूनी सलाह

शिवानंद गिरि
(अधिवक्ता)
Ph.- 9308454485
7004408851
E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

★ क्या न्यायालय के खिलाफ पत्रिका या किसी भी मीडिया में समाचार छापना या दिखाना न्यायिक अवमानना का अपराध होता है?

न्यायालय अवमानना अधिनियम 1971 (कंटेंप्ट ऑफ कोर्ट 1971) की धारा 5 के अनुसार न्यायिक कार्य की उचित आलोचना अवमानना नहीं कहलाती है ।इस धारा के अनुसार कोई व्यक्ति किसी ऐसे मामले की जिसकी सुनवाई हो चुकी हो और उसमें न्यायालय द्वारा अंतिम रूप से फैसला दिया जा चुका हो उसके गुण अवगुण पर किसी उचित आलोचना का प्रकाशन करने या प्रसारण करने पर न्यायालय अवमानना का अपराध नहीं होता है कंटेंप्ट ऑफ कोर्ट के अपराध मे धारा 12 के अनुसार जो कोई व्यक्ति न्यायालय अवमानना का दोषी पाया जाएगा उसे सादे कारावास से जिसकी अवधि 6 माह तक की हो सकती है दंडित किया जा सकता है।

★ क्या किसी मुकदमे को लड़ने से वकील मना कर सकता है?

सुप्रीम कोर्ट ने अधिवक्ता समुदाय को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण निर्णय दिया था कि वकील या उनके संगठन किसी अभियुक्त की ओर से न्यायालय में पेश होने से इंकार नहीं कर सकते हैं भले ही वह आतंकी बलात्कारी हत्यारा या कोई अन्य क्यों ना हो ,इस तरह का कोई भी इनकार संविधान का बार काउंसिल के मानकों का और भगवत गीता के सिद्धांत का उल्लंघन होगा। न्यायाधीश मार्कंडेय काटजू और ज्ञान सुधा मिश्रा की पीठ ने अपने एक आदेश में इस बात पर चिंता व्यक्त की थी कि देशभर में बार एसोसिएशन और वकीलों द्वारा किसी न किसी कारण से अभियुक्तों की ओर से न्यायालय में पेश नहीं होने का चलन बढ़ रहा है ।न्यायमूर्ति कि उक्त खंडपीठ ने टिप्पणी करते हुए कहा है कि पेशेवर आचार नीति की मांग है कि यदि मुदालय फीस देने को तैयार है तो वकील बहस करने से इनकार नहीं कर सकता है इसलिए बार एसोसिएशन का इस तरह का प्रस्ताव कि उनका कोई भी साथी किसी खास अभियुक्त के मामले में न्यायालय में पेश नहीं होगा संविधान कानून और पेशेवर आचार नीति के सभी मानदंडों के विरुद्ध तथा बार एसोसिएशन की महान परंपरा के भी विरुद्ध है जो हमेशा किसी अपराध के लिए अपराधी का बचाव करने के लिए तत्पर रहती है ।वर्ष 2007 में एक आंदोलन के दौरान पुलिसकर्मियों और कोयंबटूर के वकीलों द्वारा एक दूसरे के विरुद्ध दार आपराधिक मामलों को खारिज करते हुए खंडपीठ ने उपर्युक्त निर्णय दिया था।

★ दहेज देने या लेने के लिए कानून में कितने वर्षों तक की सजा का प्रावधान है ?

यदि कोई व्यक्ति दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961 के प्रावधान लागू होने के पश्चात दहेज देगा या लेगा अथवा दहेज देने या लेने के लिए दुश प्रेरित करेगा तो उसे 5 वर्षों तक की सजा और कम से कम घ15000 तक का जुर्माना या ऐसे दहेज के मूल्य तक की राशि इनमें से जो भी अधिक हो की सजा दी जा सकती है इसकी व्यवस्था दहेज प्रतिषेध अधिनियम की धारा 3 में किया गया है साथ ही अगर कोई व्यक्ति दहेज के लिए या किसी अन्य बातों के लिए अपनी पत्नी के प्रति क्रूरता का व्यवहार करता है या क्रूरता करता है तो इसके लिए दंड की व्यवस्था भारतीय न्याय संहिता-2023 की धारा 85 में किया गया है जिसके तहत दोषी व्यक्ति को 3 वर्षों तक के लिए कारावास और जुर्माना हो सकता है यह एक संगेय अपराध माना जाता है साथ ही यह अजमानती भी होता है इसका विचारण फर्स्ट क्लास जुडिशल मजिस्ट्रेट करते हैं।

★ अगर कोई नेता अपने भाषण से विभिन्न जातियों एवं धर्मों के लोगों के बीच नफरत पैदा करने वाला कोई बयान या भाषण देता है तो उसके लिए उन पर किस प्रकार के कानूनी बंधन लागू होंगे?

यदि कोई व्यक्ति चाहे वह नेता हो या आम पब्लिक हो या किसी भी क्षेत्र से जुड़े हुए व्यक्ति हो वह धर्म मूल वंश जन्म स्थान निवास स्थान भाषा इत्यादि के आधारों पर समाज के विभिन्न जाति वर्गों या समूहों के बीच शत्रुता या नफरत एवं सौहार्द के वातावरण को खराब करने के उद्देश्य से अगर कार्य करते हैं तो उनके लिए भारतीय न्याय संहिता की धारा 196 में बहुत कड़ी सजा का प्रावधान है। भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 196 में जो वर्णन है उसके अनुसार कोई व्यक्ति जो बोले गए या लिखे गए शब्दों द्वारा या संकेतों द्वारा या दृश्य रूपों द्वारा या अन्यथा विभिन्न धार्मिक मूल्य वंशीय या भाषाई या प्रादेशिक समूह जातियों या समुदायों के बीच सौहार्द, शत्रुता ,घृणा या वह मनुष्य की भावनाएं धर्म मूल वंश जन्म स्थान निवास स्थान भाषा जाति या समुदाय के आधारों पर या अन्य किसी भी आधार पर लोगों को भड़काने या उकसाने का प्रयास करेगा या कोई ऐसा कार्य करेगा जो विभिन्न धार्मिक मूल भाषाई या प्रादेशिक समूह या जातियों या समुदायों के बीच सौहार्द बने रहने पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाला है और जो लोग शांति में विघ्न डालता है या जिससे कार्य से विघ्न होना संभव हो अथवा कोई ऐसा प्रयास आंदोलन कवायद या अन्य वैसा ही क्रियाकलाप इस आशय से करेगा कि ऐसे क्रियाकलाप में भाग लेने वाले व्यक्ति किसी धार्मिक मूल वंशीय भाषाई या प्रादेशिक समूह या जाति या समुदाय के विभिन्न आपराधिक बल या हिंसा का प्रयोग करेंगे या प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित किए जाएंगे या यह जानते हुए संचालित करेगा कि ऐसे क्रियाकलाप में भाग लेने वाले व्यक्ति किसी धार्मिक मूल वंशीय भाषा प्रादेशिक समूह या जाति या समुदाय के विरुद्ध अपराध इकबालिया हिंसा का प्रयोग करेंगे या प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित किए जाएंगे जिससे समाज में असुरक्षा डर भय की भावना उत्पन्न होती है तो ऐसे दोषी व्यक्ति को भारतीय न्याय संहिता-2023 की धारा 196 के अनुसार 3 वर्ष तक की कारावास या जुर्माना या दोनों से दंडित किया जा सकता है द्यचुनाव के वक्त चुनाव आयोग खासकर यह दिशा निर्देश सभी राजनीतिक पार्टियों को देती है कि वह अपने उम्मीदवारों को यह सख्त हिदायत दें कि वह चुनाव प्रचार में ऐसी कोई बात जनता के सामने उनके भावनाओं को भड़काने वाली बात नहीं करेंगे अगर वह ऐसा करते हुए पाए जाते हैं तो उनकी उम्मीदवारी रद्द की जा सकती है और उन पर जनप्रतिनिधि अधिनियम एवं भारतीय न्याय संहिता -2023 में जो अपराध के लिए धाराएं हैं उनके अनुसार उन पर मुकदमा चलेगा और उन्हें दोषी पाए जाने पर दंड का भागीदार भी बनना पड़ेगा।

आवश्यकता

अगर आप में है आत्मविश्वास और तीव्र इच्छा, तो मौका है इसे पूरा करने का....

बिहार की सबसे लोकप्रिय पत्रिका

केवल सच

और

केवल सच TIMES

को बिहार के हर जिले, प्रखंड एवं पंचायत स्तर पर संवाददाता, विज्ञापन प्रतिनिधि (डोर टू डोर मार्केटिंग) एवं प्रसार के कार्य के लिए परिश्रमी एवं जुझारू युवक/युवतियों की आवश्यकता है।

योग्यता:-

जिला ब्यूरो	प्रखंड संवाददाता	पंचायत संवाददाता	विज्ञापन प्रतिनिधी
स्नातक उतीर्ण	स्नातक/इंटर	स्नातक/इंटर/मैट्रिक	स्नातक/इंटर/मैट्रिक

संपर्क करे:-

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, कंकड़बाग

पटना-20, मो.- 9431073769, 9955077308

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.

(Serving nation since 1990)

WESTOCITRON
WESTOCLAV
WESTOFERON
WESTOPLEX
QNEMIC

AOJ
AZIWEST
DAULER
MUCULENT
AOJ-D
BESTARYL-M
GAS-40
MUCULENT-D

SEVIPROT
WESTOMOL
WESTO ENZYME
ZEBRIL

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.
Industrial area, Fatuha-803201
E-mail- westerlindrugsprivatelimited@gmail.com
Phone No.:0162-3500233/2950008